संवाद सेतु

मीडिया का आत्मावलोकन

अंक 29 जुलाई 2025 नई दिल्ली

ऑपरेशन सिंदूर

सूचना एवं संवादपरक मूल्यांकन

संवाद सेतु

संपादकीय

संपादक

आशुतोष भटनागर

कार्यकारी-संपादक

डॉ. जयप्रकाश सिंह

उप-संपादक

डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

डॉ. चंदन आनंद

डिजाइनिंग

डॉ. वैभव उपाध्याय

ई-मेल

samvadsetu2011@gmail.com

फेसबुक पेज

@samvadsetu2011

अनुरोध

संवादसेतु की इस पहल पर आपकी टिप्पणी एवं सुझावों का स्वागत है। अपनी टिप्पणी एवं सुझाव कृपा उपरोक्त ई-मेल पर अवश्य भेजें।

'संवादसेतु' मीडिया सरोकारों से जुड़े पत्रकारों की रचनात्मक पहल है। 'संवादसेतु' अपने लेखकों तथा विषय की स्पष्टता के लिए इंटरनेट से ली गई सामग्री के रचनाकारों का भी आभार व्यक्त करता है। इसमें सभी पद अवैतनिक हैं।

अनुक्रम

पृष्ठ

आवरण कथा

ऑपरेशन सिंदूर की दृश्यता 4
रणनीतिक संचार की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति
डॉ. शुचि यादव

परिप्रेक्ष्य

भारत का प्रथम 'हायब्रिड वॉर' 7
डॉ. जयप्रकाश सिंह

प्रतिबिंब

सूचना युद्ध में डिजिटल एंबेडिंग का हथियार बनते डिजिटल कंटेंट क्रिएटर्स 10
डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

रणनीतिक संचार

रणनीतिक युद्ध में बलूचिस्तान बना भारत की ताकत 12
डॉ. हरीश चंद्र

वैश्विकी

मिसाइलों के साथ भारत ने नैरेटिव की जंग भी जीती 13
जयेश मटियाल

दखल

आपातकाल – जब भारत में प्रतिबंधित मीडिया रेंगने को था मजबूर 14
डॉ. चन्दन आनन्द

विमर्श

राम के जीवन चरित कृष्ण की लीला में चित्रित होता है भारत का लोकमन 17
त्रिवेणी प्रसाद तिवारी

समाचार संकलन

2027 तक भारत का एआई बाजार तीन गुना बढ़ने की उम्मीद 18
रविन्द्र सिंह भड़वाल

संपादकीय

कहते हैं फिनिक्स पक्षी अपनी ही राख में से फिर जन्म लेता है। जीवित रहने की तीव्र अभीप्सा इसे संभव बनाती है। जीने की यह इच्छा केवल सांसारिक आनंद को लेकर ही नहीं है। जिद तो सूर्य को पा लेने की है। संवादसेतु के साथ भी यही हो रहा है। रास्ता रोके खड़ी कठिनाइयां, बार–बार की बाधाएं, संसाधनों का अभाव, क्षणिक ठहराव, और संवादसेतु का पुनः उठ खड़ा होना, यह एक क्रम बन गया है।

संवादसेतु का विराम बहुत लम्बा नहीं था लेकिन तेजी से बदलती सूचना की दुनियां में एक छोटा विराम भी पिछड़ने के लिये काफी है। किन्तु संवादसेतु की समर्पित टोली ने अपने–आप को तकनीकी रूप से निरंतर अद्यतन रखा है इसलिये पाठकों को इस अल्पविराम का प्रभाव अनुभव नहीं होगा।

केवल तकनीकी ही नहीं बदली अपितु सूचना संसार नित नये रूप ले रहा है। कहा जा सकता है जिस तेजी से सूचना माध्यम बदल रहे हैं उसमें घड़ी सुइयाँ भी साथ नहीं दे पा रहीं। संवादसेतु ने जहां विराम लिया था वहाँ भी शिकायत यही थी कि आपा–धापी के इस दौर में सूचना की पुष्टि और प्रतिपुष्टि करने का समय किसके पास है। यह स्थिति तो बढ़ी ही है। अंतः यह अवश्य आया है कि गलती अथवा सूचना की चोरी पकड़ी जाने पर जो पहले लज्जित अनुभव करते थे वे अब इस पर शर्मिन्दा नहीं हैं।

विश्व के अनेक भागों में युद्ध जारी हैं। युद्धरत देश ही नहीं बल्कि उसके पीछे वैश्विक महाशक्तियाँ पिछली शताब्दी में दशकों तक चले शीतयुद्ध को दोहरा रही हैं। यह युद्ध अब भारत की दहलीज तक आ गया है क्योंकि शांतिपूर्ण ढ़ंग से अपनी विकासयात्रा में रमा भारत महाशक्तियों की आँखों की किरकिरी बन गया है। पहलगाम की घटना केवल पाकिस्तान की खुराफात थी यह विश्वसनीय नहीं लगता। भारत द्वारा ऐसी घटनाओं के बाद की गयी सर्जिकल स्ट्राइक के अनुभव के आधार पर पाकिस्तान को यह भ्रम होने का कोई कारण नहीं है कि भारत इस बर्बर घटना के बाद मौन साध जायेगा। यह मानने के अच्छे–भले कारण हैं कि इसके पीछे न केवल अन्य शक्तियों की शह थी अपितु उनके ही हथियार और गोला–बारूद भी थे।

ऑपरेशन सिंदूर की चर्चा इसलिये क्योंकि भारत ने यह युद्ध न केवल स्वदेशी तकनीक के आधार पर लड़ा और जीता बल्कि पहली बार इस युद्ध में सूचना प्रौद्योगिकी दोनों ओर से हथियार के रूप में काम में ली गयी। तकनीकी तौर पर इसे हाइब्रिड वारफेयर का नाम दिया गया जिसमें एक युद्ध सीमा पर हथियारों से लड़ा जा रहा था वहीं दूसरा युद्ध धारणा प्रबंधन के मोर्चे पर लड़ा जा रहा था। भारत ने यह प्रबंधन भी सफलतापूर्वक किया और विश्व के अनेक देशों को अपने पक्ष में खड़ा करने में सफलता पायी।

माध्यमों का उपयोग दो प्रकार से किया गया। सूचना के रूप में और संवाद के रूप में। सूचना को विश्वसनीय माध्यम से प्राप्त करना और उसके आधार पर सटीक प्रहार करने की रणनीति अपनाई गयी। साथ ही घरेलू मोर्चे पर सही सूचना देने और अन्य देशों के नीति निर्माताओं तथा जनप्रतिनिधि संस्थाओं को भारत के पक्ष से अवगत कराने के लिये प्रतिनिधिमण्डल भेजने का सुखद परिणाम आया है। संवाद की यह शैली पूरी तरह कारगर रही है।

युद्ध के दौरान ही नहीं, उसके पहले और बाद भी एक सूचना युद्ध निरंतर जारी है। यह हर काल में लड़ा जाता रहा है। माध्यम बदले हैं किन्तु प्रवृत्तियाँ वही हैं। आज के संघर्ष का बड़ा हिस्सा आभासी विश्व में लड़ा जा रहा है। भूमि पर नहीं, यह मन पर नियंत्रण का संघर्ष है। वे सभ्यताएं जो अपने समाज के मन को गढ़ने की प्रक्रिया में ही थीं, इस सूचना युद्ध के सामने परास्त हो गयीं। भारतीय मन इस युद्ध के प्रारंभ होने से शताब्दियों पहले ही गढ़ा जा चुका था इसलिये संघर्ष के लम्बे कालखण्ड में भी भौतिक जय–पराजय होती रहीं पर मन विचलित नहीं हो सका। उस पर इस टकराव का एक सीमा तक तो प्रभाव हुआ किन्तु वह पराभूत न किया जा सका। आज का सूचना युद्ध इस भारतीय मन को ही पराभूत करने का ही अभियान है। विश्वास है कि हर बार की तरह ही इस बार भी यह यशस्वी होकर उभरेगा।

संपादक
आशुतोष भटनागर

(आवरण कथा)

ऑपरेशन सिंदूर की दृश्यता: रणनीतिक संचार की एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

डॉ. शुचि यादव

पहलगाम में 22 अप्रैल, 2025 को निर्दोष पर्यटकों की निर्मम हत्या के बाद भारत ने दुनिया को यह दिखा दिया कि पर्याप्त सावधानी बरतते हुए भी आतंकवाद को किस प्रकार से कड़ा जवाब दिया जा सकता है। भारत की इस कार्रवाई से दुनिया में यह भी स्पष्ट संदेश गया कि इस तरह की किसी भी हिमाकत की सजा जरूर दी जाएगी। रणनीतिक संचार इस समूचे संघर्ष के दौरान केंद्रीय भूमिका में रहा। घाटी में हुई इस अमानवीय बर्बरता के बाद देश भर में जनाक्रोश अपने चरम पर था और हमेशा की तरह टेलीविजन समाचार चैनलों, यूट्यूब और व्हाट्सएप के माध्यम से ये भावनाएं और भी अधिक तीव्रता के साथ उभरीं। धार्मिक पहचान के आधार पर किए गए इस हमले के कई वीडियो अलग–अलग मीडिया प्लेटफॉर्मों पर तेजी से वायरल होने लगे। परिजनों की हत्या के दर्द से पीड़ित महिलाओं का एक वीडियो खूब वायरल हुआ, जिसमें वे कह रही हैं कि आतंकवादियों ने हमसे कहा था कि 'जाकर मोदी को बताओ'। वहीं, खून से लथपथ अपने पति के शव के पास बैठी सदमे में डूबी पत्नी की एक तस्वीर जल्द ही बैसरन घाटी में दर्द और मानसिक आघात जैसी भावनाओं का रूपक बन गई।

भावनाएं एक विधा में ढल गईं और टीवी स्टूडियोज ने उन्हें गम्भीर पैकेज बनाकर प्रसारित करना शुरू किया, वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रतिक्रिया देते हुए आतंकवादियों को एक स्पष्ट चेतावनी दी और वहीं भारत की जनता को उचित बदला लेने का वादा भी किया। उन्होंने राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय समुदाय से आग्रह किया कि वे 'आतंकवादियों और उनके प्रायोजकों को दिए जाने वाले अकल्पनीय प्रत्युत्तर' को देखने के लिए धैर्य बनाए रखें।

सरकार ने अगले कुछ दिनों में यह सुनिश्चित किया कि इस जवाबी कार्रवाई के समय एक समन्वित रणनीतिक संचार योजना अपनाई जाएगी। इस पूरे प्रकरण पर एक टीम कड़ी निगरानी रख रही थी। जहां आवश्यकता महसूस हुई, इस टीम ने मीडिया को भी अपनी जिम्मेदारी का सही ढंग से निर्वहन करने के लिए आगाह किया। जनता ने भी इस दौरान सराहनीय संवेदनशीलता और संयम दिखाया, जिससे भारत में सांप्रदायिक तनाव को बढ़ावा देने के आतंकवादियों के नापाक मंसूबों को विफल कर दिया गया। सरकारी तंत्र ने मीडिया और जनता को किसी भी प्रकार की गलत सूचनाओं से सावधान रहने के लिए लगातार दिशानिर्देश जारी किए।

आरम्भिक घोषणा, नाम और प्रतीक

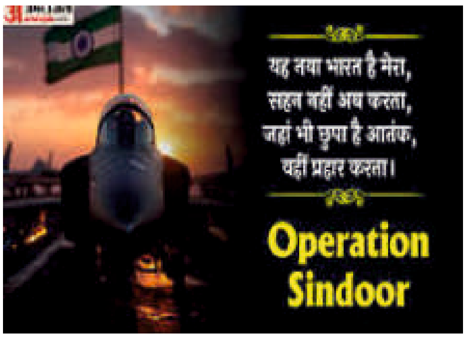

7 मई को जब भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया, तो इसकी पहली आधिकारिक सूचना एक संक्षिप्त एवं अत्यंत सटीक प्रेस नोट के रूप में सामने आई। इस तरह रोचक ढंग से ऑपरेशन सिन्दूर की सूचना सार्वजनिक किए जाने से जनता में इसके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने की उत्सुकता बढ़ती रही। राष्ट्रीय और विदेशी मीडिया दोनों ही पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत जम्मू–कश्मीर में आतंकवादी शिविरों पर भारतीय वायुसेना के सटीक हमलों के हर छोटे–छोटे विवरण को खंगालने में जुट गए। इस महत्वपूर्ण घटना पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मीडिया की नजर रहने और इनके पूर्वाग्रहों को ध्यान में रखते हुए इस घटना को लेकर कुछ नकारात्मक धारणाएं आकार लें, उससे पहले ही नई दिल्ली ने ऑपरेशन के नाम और उद्देश्यों को उजागर कर दिया।

ऑपरेशन 'सिंदूर' निर्दोष पुरुषों की उनकी पत्नियों के सामने निर्मम हत्या के 'प्रतिशोध' में निहित भावना का प्रतीक था। 'ऑपरेशन सिंदूर' नाम भारत की सामूहिक भावना के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले प्रतिशोध, पीड़ितों की भावनाओं को शांत करने और आतंकवादियों की मानसिकता पर गहरी चोट करने के लिए एक सटीक रूपक था। यह संदेश दुनिया के हर हिस्से में गूंज उठा और हमारी एक साझा दृश्यात्मक अभिव्यक्ति का प्रतीक बना। यह हिंदू सांस्कृतिक विश्वास की एक दृढ़ स्वीकारोक्ति भी थी। इसके साथ ही

यह उन लोगों की पहचान का भी प्रतिनिधि था, जिनकी निर्मम हत्या की गई थी।

हिंदू धर्म के नारी स्वरूप में अधिष्ठित आध्यात्मिकता में 'सिंदूर' शक्ति का पवित्र प्रतीक है। यह दिव्य नारी ऊर्जा 'शक्ति' के रूप में प्रकट होती है। यह स्त्री की ऐसी दिव्य शक्ति है, जो भारत के सभ्यतागत लोकाचार का केंद्र रही है। 'सिंदूर' विभिन्न स्वरूपों में इस 'शक्ति' के आह्वान का प्रतीक है। विवाहित महिलाएं 'प्रेम की शक्ति' के आह्वान के प्रतीक के रूप में अपनी मांग में सिंदूर सजाती हैं। भक्त इसे 'श्रद्धा की शक्ति' के प्रतीक के रूप में सजाते हैं। योद्धा इसे 'साहस की शक्ति' के प्रतीक के रूप में धारण करते हैं। ऑपरेशन सिंदूर के लोगो में 'ओ' के डिजाइन के साथ बिखरे हुए 'सिंदूर' ने इसे 'शक्ति' का प्रतीक बनाया, जो आतंकवादियों द्वारा महिलाओं पर जानबूझकर किए गए आघात के प्रति नई दिल्ली के कड़े जवाब की एक सटीक दृश्यात्मक अभिव्यक्ति है। ऑपरेशन के इस लोगो को सौंदर्यशास्त्र का आधार प्रदान करते हुए इसमें रंगों का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग किया गया है। 'लाल' रंग क्रोध और प्रतिशोध का प्रतीक है, 'काला' रंग उदासी और मृत्यु का प्रतीक है, जिसका उद्देश्य आतंकवादियों की मानसिकता पर कड़ा प्रहार करना था कि भारत के लिए अपने हर नागरिक का जीवन मायने रखता है। अगले दिनों में कई नए दृश्य सामने आए, जिनमें से कई मीडिया ब्रीफिंग के दौरान अभिव्यक्त किए गए।

प्रतिशोध के दृश्यात्मक रूपक के रूप में महिला अधिकारी

जब सभी की निगाहें नई दिल्ली द्वारा पहली आधिकारिक मीडिया ब्रीफिंग पर टिकी हुई थीं, तो दर्शकों ने शायद ही कल्पना की होगी कि यह एक अनूठा सांस्कृतिक प्रदर्शन होगा, जिसे रणनीतिक रूप से आतंकवाद के खिलाफ भारत के युद्ध का संदेश देने के लिए डिजाइन किया गया है। भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री दो महिला रक्षा अधिकारियों के साथ प्रेस ब्रीफिंग के लिए पहुंचे, जिसमें स्पष्ट रूप से एक उद्देश्यपूर्ण और लक्ष्य को समर्पित संदेश था।

विदेश सचिव ने ऑपरेशन सिंदूर के बारे में जानकारी देने के लिए विस्तारपूर्वक व्याख्या की शैली अपनाई, लेकिन ऑपरेशन की मुख्य खबर भारतीय सशस्त्र बलों की दो महिला अधिकारियों – कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह – ने दी। प्रेस ब्रीफिंग के लिए भारत सरकार का यह एक सुनियोजित मास्टरस्ट्रोक था। आतंकवादियों ने पहलगाम हमले का संदेश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पास ले जाने के लिए महिलाओं को जीवित छोड़ दिया था। नई दिल्ली ने उन्हें संदेश देने के लिए महिला अधिकारियों को चुनकर कड़ा जवाब दिया। भारत की ओर से आतंकवादियों को जवाब देने के लिए ये महिलाएं प्रतीकात्मक रूप से प्रतिनिधि चेहरा बन गईं। यह मीडिया ब्रीफिंग भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई, जहां 'महिलाएं' भारतीय लोकतंत्र के आधिकारिक प्रतिनिधियों के रूप में केंद्र में रहीं, जो इसके संविधान की पंथनिरपेक्ष साख का भी प्रतीक थीं। नई दिल्ली ने शत्रु के नापाक इरादों को राष्ट्रवादी और पंथनिरपेक्ष ढंग से जवाब देना सुनिश्चित किया।

एक के बाद एक मीडिया ब्रीफिंग से पाकिस्तान के आतंकी ढांचों की विनाशकारी तस्वीरों को दिखाते हुए इन महिला सैन्य अधिकारियों की छवि प्रतिशोध की एक दृश्यात्मक छवि के रूप में बदल गई। पाकिस्तान में विनाश से पहले और बाद की सैटेलाइट से प्राप्त तस्वीरों को समझाने के लिए घूमते कर्सर के साथ ये महिलाएं नई दिल्ली के दृढ़ संकल्पों की अभिव्यक्ति और पुष्टि करती रहीं। संदेश जोरदार था और स्पष्ट भी कि भारतीय महिलाएं भौतिक देह मात्र नहीं हैं। भारतीय महिलाएं पेशेवर और सटीक ढंग से उस जगह पर जवाबी हमला करने में सक्षम हैं, जहां सबसे अधिक चोट पहुंचाई जा सकती है।

'शिव तांडव स्तोत्र' और 'रश्मिरथी' का उपयोग

जैसे–जैसे भारत की सेनाओं ने पाकिस्तान पर कहर बरपाया, विनाश की इस कथा का विजुअल प्रमाण एक मीडिया ब्रीफिंग में 'शिव तांडव स्त्रोत' के वाद्य गायन के साथ दिया गया था। इस 'स्त्रोत' का उपयोग एक रूपक के रूप में उपयोग किया गया, जिसका उपयोग हिंदू धर्म में सांस्कृतिक देवता 'शिव' के क्रोध को दर्शाने के लिए किया जाता है। 'डमड्डडमड्ड..' की लगातार गूंजती ध्वनि ने भगवान शिव के डमरू की विकराल गूंज की अनुभुति करवाई, जब वे 'तांडव' (दिव्य नृत्य) में झूमते हैं। छंद में 'धगध्धधगध्ध...' के संगीत ने एक प्रचंड रूप से धधकती हुई ज्वाला जैसा महसूस करवाता है और शिव की तीसरी आंख की ओर इशारा किया, जो संहार के समय उनके माथे पर जलती है। स्पष्टतः, रामायण पर आधारित युद्ध के इस दृश्य की रचना एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक तत्व था, जिसका उपयोग सुनियोजित संदेश के प्रभाव को अधिकतम करने के लिए किया गया था कि भारतीय रक्षा प्रणालियों ने पाकिस्तान के हमलों के जवाब में उसके प्रमुख सैन्य प्रतिष्ठानों को नष्ट कर दिया था।

प्रभावशाली दृश्यात्मक अभिव्यक्तियों की इस शृंखला का अंत राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा लिखित महाकाव्य 'रश्मिरथी' की पंक्तियों (याचना नहीं अब रण होगा...) के उपयोग के साथ हुआ। इस प्रतिष्ठित महाकाव्य की पंक्तियों का उपयोग भारत के जवाब देने के अधिकार के औचित्य के रूपक के रूप में किया गया। स्पष्ट रूप से इस दृश्यात्मकता का उद्देश्य एक अत्यंत आहत और आघातग्रस्त राष्ट्र को 'न्याय हुआ' का साझा सांस्कृतिक अनुभव करवाना था। जैसे–जैसे हैमर, स्कैल्प और ब्रह्मोस द्वारा मचाई गई तबाही की तस्वीरें एक–एक करके सामने आती गईं, वैसे–वैसे हिंदू सांस्कृतिक ग्रंथों की ध्वनि को उस दृश्य में इस तरह पिरोया गया, जिससे एक सशक्त और प्रभावशाली कथा बहने लगी। पाकिस्तान के अंदर हुई भारी तबाही को प्रमाणित करने के लिए भारतीय सैन्य बलों ने उपग्रह चित्रों को एक प्रभावशाली ऑडियो–विजुअल कथा में बुना और उसे सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया।

मीडिया ब्रीफिंग्स की पूरी दृश्य संरचना भारत के अटल संकल्प को उजागर करने के उद्देश्य से तैयार की गई थी। भारतीय सभ्यता और लोकतांत्रिक परंपरा से लिए गए प्रतीकों और रूपकों का उपयोग 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान खुलकर किया गया, एक सावधानीपूर्वक तैयार की गई संचार रणनीति का ही हिस्सा था। दृश्यों की प्रस्तुति के आधार पर तैयार की गई इस कथा का सांस्कृतिक पक्ष भारत के आतंकवाद विरोधी विमर्श में लंबे समय तक प्रतिध्वनित होता रहेगा। दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ नई दिल्ली ने सफलतापूर्वक दुनिया को यह दिखा दिया कि वह गहन कल्पनाशीलता का उपयोग करते हुए प्रभावशाली ढंग से रणनीतिक संवाद कर सकती है।

भारत का प्रथम ‘हायब्रिड वॉर’

डॉ. जयप्रकाश सिंह

ऑपरेशन सिंदूर इस बात की नीतिगत अभिव्यक्ति है कि इक्कीसवीं शताब्दी में रणक्षेत्र और रणनीति पूरी तरह बदल गए हैं। अब संघर्ष की वैधता को साबित करना और किसी भी स्थिति में जीत की मुद्रा को धारण करना पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। इसी कारण संचार और भाषा युद्ध के निर्णायक अंग बन गए हैं। इसीलिए, जब सीडीएस अनिल चौहान ने यह बयान दिया कि इस संघर्ष के दौरान सैन्य बलों का 15 प्रतिशत समय झूठी खबरों और झूठे विमर्श से लड़ने में गया, तो यह कई लोगों के लिए चौंकाने वाला तथ्य था। संचार के मोर्चे पर सक्रियता की यह स्वीकृति वस्तुतः इस बात की भी स्वीकृति थी कि ऑपरेशन सिंदूर एक हायब्रिड वॉर था, क्योंकि हायब्रिड वॉर की विशेषता ही ‘संचार की केंद्रीयता’ है।

हायब्रिड वॉरफेयर की यही विशेषता है कि इसमें युद्ध का निश्चित स्थल और समय नहीं रह जाता और न ही गोलाबारी युद्ध का एकमात्र संकेतक रह जाता है। इसमें आर्थिक, तकनीकी अथवा सैन्य मोर्चे पर कोई एक महत्वपूर्ण निर्णय लेकर उसे संचार–प्रक्रिया के माध्यम से इस तरह व्यापक और प्रभावी बनाया जाता है कि अराजकता की स्थिति पैदा हो जाती है अथवा प्रतिस्पर्धी की निर्णयन क्षमता पंगु हो जाती है। इस युद्ध शैली में सैन्य संघर्ष युद्ध का एक महत्वपूर्ण हिस्सा तो होता है, लेकिन सैन्य संघर्ष और युद्ध एक–दूसरे के पर्याय नहीं रह जाते।

हायब्रिड वॉरफेयर की विशेषताओं को सटीक शब्दों में अभिव्यक्त करते हुए 12 अप्रैल, 2022 को तत्कालीन एअर चीफ मार्शल विवेक राम चौधरी ने कहा था कि भविष्य में पहली गोली चलने और पहले एअरक्राफ्ट को सीमा पार करने से पूर्व युद्ध का एक बड़ा हिस्सा लड़ा जा चुका होगा। बैसरन में आतंकियों ने नरसंहार के बाद भारत ने अपना प्रत्युत्तर जिस तरह से डिजाइन किया, उसमें हायब्रिड वॉरफेयर के तत्त्व स्पष्ट रूप से झलक रहे थे।

पहलगाम के बैसरन में हुई पर्यटकों के नरसंहार की घटना के बाद सिंधु जल संधि को स्थगित कर भारत ने अपरम्परागत, लेकिन निर्णायक प्रत्युत्तर दिया। यह निर्णय कितना घातक है इसका अंदाजा हायब्रिड वॉरफेयर की समझ के बिना नहीं लगाया जा सकता था। ऑपरेशन सिंदूर के बाद के घटनाक्रम में भारतीय सैन्य प्रतिष्ठान ने अपने रणनीतिक संचार में ‘संदेश–प्रबंधन’ को लेकर सजगता दिखाई, वह भी इस संघर्ष को हायब्रिड वॉर के रूप में स्वीकार करने और उसी शैली में उत्तर देने का प्रयास दिखता है।

‘दुश्मन को उसी की भाषा में’ और नागरिकों को ‘उनकी भाषा में’ समझाने का प्रयास

ऑपरेशन सिंदूर भारतीय सशस्त्र बलों और भारतीय हथियारों की सफलता का नया प्रतिमान बन कर उभरा। इस सफलता के कई रणनीतिक और तथा तकनीकी आयामों ने देश–दुनिया का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया, लेकिन रणनीतिक संचार के मोर्चे पर जिस प्रभावी और मारक ढंग से संदेशों का संप्रेषण किया गया, वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

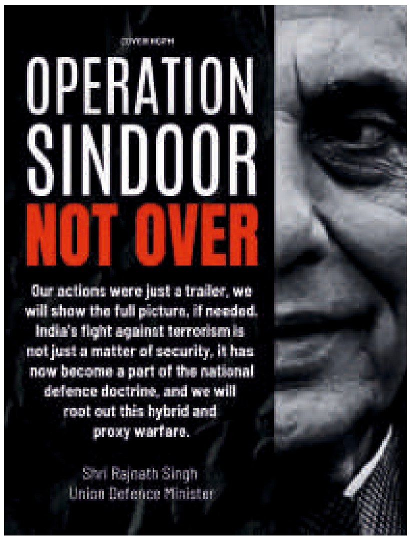

रणनीतिक संचार के मोर्चे पर मिली सफलता इसलिए उल्लेखनीय हो

जाती है, क्योंकि पिछले कुछ युद्धों के बाद यह धारणा बन गई थी कि भारत युद्ध अथवा संघर्ष तो जीत जाता है, लेकिन देश–दुनिया तक उसकी सटीक 'मैसेजिंग' करने में विफल हो जाता है। इसके कारण विजय के बाद भी एक संशय की स्थिति बन जाती है। संशय की यह स्थिति भारत के आत्मबल और वैश्विक स्वीकृति को बुरी तरह से प्रभावित करती रही है।

'बालाकोट एयरस्ट्राइक' के बाद यह बात विशेष रूप से रेखांकित की गई थी कि भारत ने एक झटके में पाकिस्तान की नाभिकीय छतरी को पूरी तरह छिन्न–भिन्न कर दिया। यह पिछले दो दशकों में भारत द्वारा प्राप्त किया गया सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक लक्ष्य था। पाकिस्तान के प्रति भारतीय नागरिकों में नए सिरे से धारणा बनाने और नाभिकीय भयदोहन से बाहर निकालने का यह स्वर्णिम अवसर था।

दुर्भाग्यवश, भारत में विमर्श यह बना दिया गया कि हवाई हमले में आतंकवादियों को कुछ नुकसान हुआ भी है कि नहीं? और यह भी कि कितनी संख्या में आतंकवादी मारे गए हैं? तब प्रश्न उठाने वालों ने इस बात का ध्यान नहीं रखा कि धारणा के युद्ध में संख्या के साथ मनोवैज्ञानिक बदलावों का अधिक महत्व होता है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत संख्या के रणनीतिक जाल में नहीं उलझा। अपने इस बहुचर्चित बयान कि हमारा काम दुश्मनों को नुकसान पहुंचाना है, शवों को गिनना नहीं, के जरिए एयर मार्शल ए.के. भारती ने यह स्पष्ट संकेत दिए कि इस बार सशस्त्र बल संख्या की भूलभुलैया में रणनीतिक और धारणा के मोर्चे पर अर्जित की गई उपलब्धियों को गंवाना नहीं चाहते।

इस ऑपरेशन के दौरान सशस्त्र बलों की प्रभावी और मारक 'संचार रणनीति' की झलक सशस्त्र बल की प्रेस ब्रीफिंग में भी स्पष्ट रूप से दिखी। बैसरन में धर्म पूछकर एवं केवल पुरुषों को निर्मम ढंग से निशाना बनाकर आतंकवादियों ने भारतीय सैन्य और सत्ता प्रतिष्ठान को कुछ निश्चित 'रणनीतिक' संदेश भेजे थे। ऑपरेशन सिंदूर के बाद दो महिला सैन्य अधिकारियों द्वारा प्रेस ब्रीफ करने के निर्णय को इस पृष्ठभूमि में देखने पर रणनीतिक संचार की दृष्टि से इसकी उत्कृष्टता का अनुमान बेहतर ढंग से लगाया जा सकता है। इस एक प्रेस ब्रीफिंग ने अनेकों लक्षित समूहों को संदेश दिया। सबसे रोचक संदेश पाकिस्तानी सेना और वहां की महिलाओं के लिए था। यह महिलाओं को कमजोर रखने और मानने की पाकिस्तानी और आतंकी मानसिकता पर आक्रमण से कम नहीं था।

इस प्रेस ब्रीफिंग की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता इसका भाषाई संयोजन था। प्रेस ब्रीफिंग में कर्नल सोफिया कुरैशी ने ऑपरेशन सिंदूर से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी पहले हिंदी में दी। समानांतर रूप से विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने अंग्रेजी में भी सूचनाएं साझा कीं। जिस देश में हाल के वर्षों तक रक्षा, विदेश और वित्त संबंधी चिंतन और विमर्श पर अंग्रेजी का एकाधिकार माना जाता रहा हो, जिस देश में लगभग एक दशक पहले तक रक्षा और विदेश मंत्रालय में भारतीय भाषाओं के पत्रकारों और उनके प्रश्नों की पहुंच नगण्य रही हो, वहां पर इतनी महत्वपूर्ण प्रेस ब्रीफ की शुरुआत हिंदी में करना कइयों को आश्चर्य में डाल सकता है।

इसे यदि रणनीतिक संचार की दृष्टि से देखें, तो यह भाषा प्रेम अथवा भाषाई पहचान को रेखांकित करने भर का मामला नहीं था, बल्कि यह संदेशों को अधिक प्रभाव और सहजता के साथ प्रेषित कर कुछ रणनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश की गई थी। यह अपने संदेशों को पहले ही झटके में धरातल तक पहुंचाने और धारणा–निर्माण के क्षेत्र में खुद को आगे रखने की सोची–समझी रणनीति थी। यह प्रेस ब्रीफिंग इस बात की स्वीकारोक्ति थी कि परिवेश की भाषा सर्वाधिक व्यापकता और सहजता के साथ संदेशों को सामान्य नागरिक तक पहुंचाती है।

बाद में एयर मार्शल ए.के. भारती ने भारतीय रणनीति को समझाने के लिए रामचरित मानस की जिस चौपाई का उपयोग किया, वह भी परिवेश की भाषा के सामर्थ्य के उपयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस चौपाई का उपयोग सदियों से भारतीय जनमानस उद्दंड को 'सही रास्ते पर लाने की नीति' के एक

सशक्त मुहावरे के रूप में करता रहा है। 'विनय न मानत जलधि जड़ गए तीन दिन बीति। बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति' में निहित संदेश इतने स्पष्ट, सटीक हैं और पहुंच इतनी विस्तृत है कि इसके उपयोग के बाद इसको आगे व्याख्यायित करने की आवश्यकता नहीं रह जाती। इस चौपाई के उपयोग ने रणनीतिक चिंतकों और सामान्य भारतीयों के बीच एक संवादसेतु का निर्माण किया। इससे एक ही झटके में दूरदराज के गांव तक भारतीय सैन्य प्रतिष्ठान की नीति और विजय की कथा को पहुंचा दिया।

प्रश्न यह उठता है युद्ध में 'अपनी भाषा' इतनी महत्वपूर्ण क्यों हो गई है? और यह भी कि क्या भारत के अतिरिक्त अन्य देशों ने भी हाल के दिनों में युद्ध और सुरक्षा के मोर्चे पर परिवेश की भाषाओं को प्राथमिकता देना प्रारंभ किया है। इसका उत्तर युद्ध की प्रकृति और स्वरूप में आए बदलावों में छिपा है। और इसी के कारण वैश्विक स्तर पर परिवेश की भाषाओं में रणनीतिक और सैन्य सूचनाएं देने का प्रचलन बढ़ा है।

समसामयिक युद्धशैली में, जिसे हायब्रिड वॉरफेयर कहा जाता है, युद्ध का एक बड़ा हिस्सा धारणा के मोर्चे पर लड़ा जा रहा है और इस तरह के युद्ध में अपने नागरिकों की धारणा सबसे महत्वपूर्ण होती है। वैश्विक धारणाएं आपके प्रतिकूल हों तो उनका प्रबंधन किया भी जा सकता है, लेकिन यदि घरेलू मोर्चे पर ही युद्ध के बारे में धारणाएं प्रतिकूल हो जाएं तो नीति–निर्णयन की प्रक्रिया और सैन्य मनोबल दोनों बुरी तरह अपंग हो जाती हैं। घरेलू मोर्चे के अतिरिक्त अन्य देशों से भी वैधता और समर्थन प्राप्त करने के लिए परिवेश की भाषाओं के उपयोग का चलन बढ़ा है। इस परिदृश्य में वैधता और समर्थन प्राप्त करने में परिवेश की भाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई है।

इसलिए, अब सुरक्षा और सैन्य चिंतन किसी विशिष्ट भाषा तक सीमित रहने वाले नहीं हैं। युद्ध का एक प्रमुख तथा निर्णायक मोर्चा 'अपनी भाषाएं' बनने वाली हैं। हायब्रिड वॉरफेयर में दुश्मन को उसकी भाषा में समझाना एक प्रभावी नीति है, लेकिन अपने नागरिकों और मित्रों को उनकी 'अपनी भाषा' में समझाना विजय की मूलभूत रणनीति बन गई है। इसलिए, आने वाले दिनों में भारतीय सैन्य प्रतिष्ठान और ए.डी.जी.पी.आई. यदि बहुभाषी होकर संवाद करते दिखें, तो इसमें किसी को, किसी भी तरह का आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

सूचना युद्ध में डिजिटल एंबेडिंग का हथियार बनते डिजिटल कंटेंट क्रिएटर्स

डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

डिजिटल कंटेंट क्रिएटर्स को देश के डिजिटल एंबेसेडर्स के रूप में देखा जाता है, क्योंकि ये भारत की सांस्कृतिक विविधता, परंपराओं, मूल्यों और आधुनिक उद्यमशीलता की सोच को वैश्विक मंचों तक पहुंचाते हैं। इनके माध्यम से भारत की आत्मा – इसकी कला एवं संस्कृति, साहित्य, संगीत, योग, खानपान, पर्यटन, तकनीक और स्टार्टअप संस्कृति डिजिटल स्पेस में जीवंत होती है। 2023 में भारत में करीब 10 करोड़ से अधिक कंटेंट क्रिएटर्स थे, जो दर्शाता है कि यह क्षेत्र कितनी तेजी से बढ़ रहा है। केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने पिछले वर्ष एक कार्यक्रम में बताया कि भारत के रचनात्मक उद्योग (क्रिएटिव इंडस्ट्री) का आकार अब 30 अरब डॉलर तक पहुंच चुका है और यह देश की कार्यरत जनसंख्या के लगभग 8 प्रतिशत को रोजगार उपलब्ध कराता है। यह आंकड़ा स्पष्ट करता है कि कंटेंट निर्माण अब केवल शौक या मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा है, बल्कि समृद्ध आर्थिक और सामाजिक शक्ति के रूप में भी इसका तेजी के साथ उभार हुआ है।

दूसरी ओर शत्रु राष्ट्रों के कुछ तत्व इन डिजिटल प्रतिभाओं को 'डिजिटल एंबेडिंग' की खतरनाक रणनीति के तहत निशाना बना रहे हैं। डिजिटल एंबेडिंग एक नई और सूक्ष्म किस्म की जासूसी तकनीक बनकर उभरी है, जिसमें दुश्मन देश भारतीय डिजिटल इकोसिस्टम में गहरी पैठ बनाते हैं। इसका उद्देश्य है स्थानीय स्तर पर विश्वसनीय माने जाने वाले कंटेंट क्रिएटर्स को प्रभावित कर, उनसे संवेदनशील सूचनाएं प्राप्त करना। ये सूचनाएं सैन्य गतिविधियों, सीमावर्ती क्षेत्रों की स्थिति, धार्मिक यात्राओं और सामाजिक ट्रेंड्स जैसे विषयों से जुड़ी होती हैं, जिन्हें सरल और सामान्य वीडियो के माध्यम से बाहर भेजा जाता है। इस रणनीति की सबसे खतरनाक बात यह है कि यह "फ्रीलांस कंटेंट" या "लोकल स्टोरीटेलिंग" के नाम पर संचालित होती है, जिससे इसके पीछे छिपे उद्देश्य की पहचान करना मुश्किल हो जाता है। पेमेंट के लिए नकली एनजीओ अकाउंट्स, अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग चैनल्स और क्रिप्टो वॉलेट्स का इस्तेमाल किया जाता है, जिससे इन गतिविधियों को वैध और स्वतंत्र कार्य के रूप में दिखाया जा सके। यह स्थिति भारत की आंतरिक और डिजिटल सुरक्षा के लिए गंभीर चिंता का विषय बन चुकी है।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान जांच एजेंसियों द्वारा उजागर किए गए मामलों में यह तथ्य सामने आया है कि भारत विरोधी ताकतें, विशेषकर पाकिस्तान, भारत के उभरते हुए कंटेंट क्रिएटर्स को निशाना बनाकर एक सुनियोजित जासूसी नेटवर्क खड़ा कर रही हैं। 'डिजिटल एंबेडिंग' की इस नई रणनीति के तहत सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल माध्यमों के जरिए युवाओं को आर्थिक प्रलोभन, नकली ब्रांड कोलैबरेशंस और पहचान छिपाकर की जाने वाली डिजिटल बातचीत के माध्यम से फंसाया जा रहा है। इनके माध्यम से न केवल संवेदनशील सूचनाएं प्राप्त की जा रही हैं, बल्कि सेना की गतिविधियों, सीमावर्ती इलाकों की तस्वीरों और आंतरिक तैनाती जैसे मामलों तक की जानकारी हासिल की जा रही है। इस प्रकार अब तक देश के डिजिटल एंबेसडर कहे जाने वाले कंटेंट क्रिएटर्स में से कई लोगों की रचनात्मकता देशविरोधी ताकतों के हाथों का औजार बन गई है।

ऑपरेशन सिंदूर के पश्चात् भारत की सुरक्षा एजेंसियों ने डिजिटल माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डालने वाले तत्वों पर सख्ती बढ़ा दी थी। इसी क्रम में पंजाब पुलिस ने यूट्यूबर जसबीर सिंह को पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। जसबीर सिंह का यूट्यूब चैनल 'जान महल' 11 लाख से अधिक सब्सक्राइबर्स के साथ सोशल मीडिया पर अत्यंत प्रभावशाली था। जांच एजेंसियों के अनुसार, जसबीर सिंह ने 'धार्मिक यात्राओं की कवरेज', 'सोशल ट्रेंड्स' और 'सीमावर्ती क्षेत्रों की गतिविधियों' के बहाने भारत में

संभावित सैन्य मूवमेंट्स की सूचनाएं और संवेदनशील डाटा पाकिस्तान को भेजा। प्राप्त साक्ष्यों से संकेत मिलता है कि वह लंबे समय से डिजिटल जासूसी नेटवर्क का हिस्सा था, जो 'डिजिटल एंबेडिंग' के जरिए भारत विरोधी एजेंडे को संचालित कर रहा था। यह मामला भारत की साइबर और आंतरिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर चेतावनी है। यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया के उभार के साथ ही देश की सुरक्षा को नए प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ रहा है, जहां कंटेंट क्रिएटर्स भी विदेशी ताकतों के निशाने पर हैं।

पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में पकड़े गए जसबीर सिंह ने स्टेट स्पेशल ऑपरेशन सेल से पूछताछ में चौंकाने वाला खुलासा किया है। उसने बताया कि भारत में जासूसों का नेटवर्क तैयार करने वाला मास्टरमाइंड पाकिस्तान का यूट्यूबर रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर नासिर ढिल्लों है। जसबीर एहसान उर रहिम उर्फ दानिश के जरिए नासिर के संपर्क में आया था। नासिर पाकिस्तान पुलिस में सब इंस्पेक्टर रह चुका है और अब वह पाकिस्तान का प्रसिद्ध यूट्यूबर है, जो भारत से पाकिस्तान जाने वाले यूट्यूबर और ब्लॉगर को घुमाने के बहाने आईएसआई एजेंटों और आर्मी के अधिकारियों से मिलवाता है। ज्योति और जसवीर सिंह पाकिस्तान दौरे पर 10 दिन तक लाहौर में नासिर के साथ रहे थे। नासिर के पेज पर कई पंजाबी गायकों और अभिनेताओं के साथ फोटो हैं।

जसबीर ने बताया कि आईएसआई एजेंट भारत से जाने वालों से सोशल वर्कर, ट्रैवल एजेंट, ब्लॉगर और यूट्यूबर के तौर पर मिलते थे। बाद में उन्हें पाकिस्तान घुमाने और यूट्यूब चैनल के साथ जुड़कर पैसा कमाने का ऑफर देते थे। पाकिस्तान के अच्छे प्रचार और हिंदुओं पर अच्छे कंटेंट बनाने के लिए पैसों का लालच देकर नेटवर्क से जोड़ा जाता था। धीरे-धीरे भारत और सेना की मूवमेंट की जानकारी देने के लिए मोटी रकम का लालच देकर जासूसी कराई जाती थी।

इसी कड़ी में सामने आया दूसरा चौंकाने वाला मामला यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा का है, जिसे पाकिस्तान के लिए जासूसी के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। जांच में पता चला है कि ज्योति पाकिस्तान के एक पूर्व सब इंस्पेक्टर नासिर ढिल्लों के संपर्क में थी, जो कथित तौर पर भारत विरोधी डिजिटल अभियानों से जुड़ा हुआ है। दोनों के बीच हुए एक पॉडकास्ट की वीडियो हाल ही में सोशल मीडिया पर वायरल हुई है। यह वीडियो 14 अप्रैल को नासिर ढिल्लों ने अपने यूट्यूब चौनल पर अपलोड की थी, जिसमें ज्योति पाकिस्तान की यात्रा को सकारात्मक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करती दिख रही है। वीडियो में वह कहती हैं, उम्मीद है कि इस वीडियो को देखने के बाद और लोग पाकिस्तान जाना चाहेंगे। साथ ही उसने यह भी कहा कि पाकिस्तान के बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन वहां नफरत जैसा कुछ नहीं दिखा। ज्योति मल्होत्रा ने न केवल पाकिस्तान के प्रति सकारात्मक जनधारणा बनाने का प्रयास किया, बल्कि भारत की सुरक्षा से जुड़ी संवेदनशील जानकारियां भी साझा कीं। यह मामला दर्शाता है कि भारत के डिजिटल कंटेंट इकोसिस्टम में कुछ तत्व, जाने-अनजाने में, दुश्मन देशों के रणनीतिक उपकरण बनते जा रहे हैं।

डिजिटल एंबेडिंग की बढ़ती घटनाएं भारत के लिए एक नई किस्म की चुनौती बनकर उभरी हैं, जहां सोशल मीडिया पर सक्रिय कंटेंट क्रिएटर्स जाने-अनजाने में राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं। यह एक ऐसी सूक्ष्म रणनीति है, जिसमें दुश्मन देश भारतीय डिजिटल परिदृश्य में घुसपैठ कर विश्वसनीय दिखने वाले क्रिएटर्स को आर्थिक, सामाजिक और डिजिटल सहयोग के बहाने धीरे-धीरे अपनी जासूसी गतिविधियों में शामिल करते हैं। यह खतरा तब और अधिक गंभीर हो जाता है, जब इन क्रिएटर्स के पास लाखों की संख्या में फॉलोअर्स होते हैं और उनके माध्यम से दी गई सूचनाएं जनमत और सुरक्षा दोनों को प्रभावित कर सकती हैं। यह स्पष्ट हो चुका है कि डिजिटल फ्रीलांसिंग, ट्रैवल ब्लॉगिंग या सांस्कृतिक संवाद के नाम पर छिपा यह नेटवर्क न केवल संवेदनशील जानकारी एकत्र करता है, बल्कि भारत विरोधी नैरेटिव को भी सोशल मीडिया पर प्रसारित करता है। ऐसे में आवश्यक है कि भारत सरकार और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स मिलकर एक व्यापक साइबर-जागरूकता अभियान चलाएं, जिसमें क्रिएटर्स को संदिग्ध अंतरराष्ट्रीय संपर्कों, फर्जी ब्रांड कोलैबरेशंस और असामान्य भुगतान माध्यमों से सतर्क रहने की ट्रेनिंग दी जाए। साथ ही किसी भी विदेशी यात्रा से पहले उचित सुरक्षा मंजूरी और डिजिटल गतिविधियों की निगरानी सुनिश्चित की जानी चाहिए। क्रिएटर्स को यह समझना होगा कि राष्ट्र की सुरक्षा से बड़ा कोई ब्रांड या व्यूअरशिप नहीं है। डिजिटल स्वतंत्रता का अर्थ डिजिटल जिम्मेदारी भी है और यही समय की सबसे बड़ी मांग है।

(रणनीतिक संचार)

रणनीतिक युद्ध में बलूचिस्तान बना भारत की ताकत

डॉ. हरीश चंद्र

7 मई, 2025 को भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के विरुद्ध चलाया गया ऑपरेशन सिंदूर दुनिया भर में चर्चा का विषय बन गया। यह कार्रवाई जम्मू–कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पहलगाम में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकियों द्वारा किए गए हमले के प्रतिशोधस्वरूप की गई थी। भारत ने इस हमले को न केवल अपनी संप्रभुता पर सीधा हमला माना, बल्कि ऑपरेशन सिंदूर को अंजाम देकर आतंकवाद के खिलाफ कड़ा संदेश भी दिया।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद, भारत में बलूचिस्तान एक प्रमुख ट्रेंड के रूप में उभरकर सामने आया। ऑपरेशन के अगले ही दिन 8 मई को बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी द्वारा पाकिस्तानी सेना पर एक विस्फोटक आईईडी ब्लास्ट किया गया। उस हमले में 12 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए। इस घटना को भारत में सोशल मीडिया पर व्यापक समर्थन और प्रचार मिला। लोगों ने इसे पाकिस्तान के भीतर बढ़ते असंतोष और विघटनकारी गतिविधियों के रूप में देखा। बलूचिस्तान में हो रही ये घटनाएं भारत की कूटनीतिक और सामरिक बढ़त को इंगित करती हैं।

पाकिस्तान में हुई इस घटना को भारतीय मीडिया ने न केवल प्रमुखता से प्रस्तुत किया, बल्कि इसे पाकिस्तान के विरुद्ध एक रणनीतिक हथियार की तरह प्रयोग किया। बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी द्वारा की गई इस कार्रवाई ने पाकिस्तान के अंदरूनी हालातों की कमजोरी को विश्व–पटल पर उजागर करने का अवसर दिया। इससे भारतीय सेना और जनता का मनोबल बढ़ा, क्योंकि यह स्पष्ट हो गया कि पाकिस्तान स्वयं अपने देश के भीतर ही असंतोष और विद्रोह से जूझ रहा है। वहीं, पाकिस्तान की सरकार और मीडिया इस मुद्दे पर अपना पक्ष रखने और अंतरराष्ट्रीय समुदाय को संतुष्ट करने में असफल रही। पाकिस्तान की इस असमर्थता ने भारत को कूटनीतिक रूप से मजबूत किया और पाकिस्तान की वैश्विक छवि को गहरा आघात पहुंचा।

इस घटना पश्चात पाकिस्तान ने अगले दो दिन में भारत के खिलाफ डिजिटल वॉर छेड़ने का असफल प्रयास किया। पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई सोशल मीडिया पर लगातार झूठ फैलाता रही। पाकिस्तान के झूठे दावों से निपटने के लिए भारत ने साइबर वॉर रूम से जवाबी कार्रवाई अमल में लाई। इसमें एनआईए और सर्ट–इन के विशेषज्ञ पाकिस्तान की गतिविधियों पर नजर रख रहे थे। साइबर विशेषज्ञों ने पाकिस्तान के किसी भी डिजिटल या साइबर अटैक को रोकने के लिए एआई आधारित अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल किया। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी की हर छोटी घटना को भारतीय मीडिया और सोशल मीडिया में और दिनों की अपेक्षा प्रमुखता से स्थान दिया गया। प्रिंट मीडिया के अंग्रेजी और हिंदी समाचार–पत्रों के अलावा टीवी और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बलूचिस्तान का पाक सेना के खिलाफ छेड़ा अभियान छाया रहा। हालांकि यह भी कहा जा सकता है कि भारत के ऑपरेशन सिंदूर से बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी को एक संजीवनी मिली, लेकिन अभी इससे ज्यादा कहना जल्दबाजी होगी।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत–पाकिस्तान के बीच पहली बार व्यापक स्तर पर डिजिटल युद्ध देखने को मिला। भारतीय मीडिया में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान से टकराव शुरू होने के कुछ घंटों में ही पाकिस्तान के दो लाख से ज्यादा सोशल मीडिया अकाउंट की जांच कर पता लगा लिया कि उनमें से आठ हजार एक्स (ट्विटर) अकाउंट, 25 हजार यूट्यूब चैनल, दो हजार फेसबुक अकाउंट भारत में युद्ध संबंधी फर्जी सूचनाएं व अफवाहें फैला रहे हैं। भारत ने इन सभी अकाउंट को तुरंत ब्लॉक करने का आदेश सोशल मीडिया कंपनियों को जारी कर दिया। पाकिस्तान की मंशा सोशल मीडिया के जरिए भारत में डर और अस्थिरता पैदा करने की थी।

इस घटना के बाद पाकिस्तान की ओर से यह साबित करने के प्रयास किए गए कि देश में किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई है। इसके लिए इस्लामाबाद, कराची, एबटाबाद, सियालकोट जैसे प्रमुख शहरों से वीडियो और तस्वीरें बनाकर सोशल मीडिया पर डाली गईं, जिनमें यह दिखाया गया कि हालात सामान्य हैं। ऐसे एक लाख से अधिक फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किए गए, ताकि पाकिस्तान की आंतरिक स्थिति को स्थिर और शांतिपूर्ण दिखाया जा सके।

हालांकि, भारत की खुफिया और डिजिटल निगरानी एजेंसियों ने समय रहते इन सभी गतिविधियों की पहचान कर ली और इनके संभावित खतरों को भांपते हुए त्वरित कार्रवाई की। भारत ने ऐसे तमाम फर्जी पोस्ट, फोटो और वीडियो को विभिन्न डिजिटल मंचों से हटवाने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। इसके साथ ही यूट्यूब के कुछ चैनल जैसे उजैर क्रिकेट, उमर चीमा एक्सक्लूसिव, आसमां शिराजी, मुनीब फारूक, रफ्तार, जीएनएन और बोल न्यूज लगातार अफवाहें फैलाने में सक्रिय थे, जो पाकिस्तान के पक्ष में झूठी सूचनाएं प्रसारित कर रहे थे। भारत ने इन चैनलों की निगरानी की और इनसे जुड़ी भ्रामक सामग्रियों को समय रहते नियंत्रित कर लिया। यह भारत की डिजिटल रणनीति और सूचना युद्ध में उसकी तत्परता का प्रमाण था। सूचना प्रसारण के इस युद्ध में भारत ने न केवल अपनी साख बनाए रखी, बल्कि विरोधी पक्ष के दुष्प्रचार को भी प्रभावी ढंग से निष्क्रिय किया, जो युद्धकालीन सूचना नियंत्रण में एक बड़ी सफलता मानी जा सकती है।

इस पूरे घटनाक्रम से सीख मिलती है कि आधुनिक युद्ध केवल सैन्य नहीं, बल्कि सूचना और साइबर मोर्चों पर भी लड़े जाते हैं। भविष्य के लिए भारत को अपनी साइबर क्षमताओं को और भी मजबूत करना चाहिए। फेक न्यूज के खिलाफ तेज कार्रवाई की प्रणाली विकसित करनी चाहिए और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए ताकि किसी भी प्रकार के दुष्प्रचार से देश की छवि और सुरक्षा प्रभावित न हो। वहीं, भारत को चाहिए कि वह अपने कूटनीतिक मोर्चे को और सशक्त करते हुए बलूचिस्तान जैसे मुद्दों पर वैश्विक समर्थन प्राप्त करे।

(वैश्विकी)

मिसाइलों के साथ

भारत ने नैरेटिव की जंग भी जीती

जयेश मटियाल

"पाकिस्तान वैश्विक शांति की गारंटी है।" पाकिस्तान के सूचना एवं प्रसारण मंत्री अताउल्लाह तरार ने यह कहकर पत्रकार याल्दा हकीम को अपने मुल्क आने का निमंत्रण दिया ही था कि इतने में उन्होंने उत्तर दिया "मैं पाकिस्तान गई हूं और हम जानते हैं कि ओसामा बिन लादेन को पाकिस्तान के एबटाबाद में खोजा गया था।" ऑपरेशन सिंदूर के दौरान यूनाइटेड किंगडम स्थित स्काई न्यूज की पत्रकार याल्दा हकीम की पत्रकारिता ने, उनके कठोर प्रश्न और हाजिर जवाबी ने किसी को हैरान, तो किसी को परेशान कर दिया।

आम तौर पर यह होता आया है कि भारत के प्रति पश्चिमी मीडिया का दृष्टिकोण नकारात्मक रहा है। इसके कई कारण हो सकते हैं। औपनिवेशिक मानसिकता, भू–राजनीतिक स्वार्थ या सांस्कृतिक अज्ञानता। भारत के संदर्भ में, पश्चिमी मीडिया अक्सर गरीबी, सामाजिक असमानता और धार्मिक तनाव जैसे मुद्दों को अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है, जबकि भारत की प्रगति, सामरिक शक्ति और वैश्विक प्रभाव को कमतर आंकता है। ऐसे में भारत के नैरेटिव को पुष्ट करना तो बहुत दूर की बात है।

हालांकि इस बार वैश्विक मंचों पर पाकिस्तान को लेकर भारतीय नैरेटिव छाया रहा। अफगान मूल की पत्रकार याल्दा हकीम को भी इसका श्रेय जाता है। याल्दा हकीम ने अपने न्यूज शो में भारतीय नेताओं, भारतीय अधिकारियों और पाकिस्तानी नेताओं–मंत्रियों को आमंत्रित किया। यहां एक बात समान रही और वह है भारतीय नैरेटिव का पुष्ट होना। पाकिस्तान के सूचना एवं प्रसारण मंत्री को यह जवाब देना कि "मेरे कार्यक्रम में, एक सप्ताह पहले ही, आपके रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने स्वीकार किया था कि पाकिस्तान की दशकों से देश में आतंकवादी समूहों को वित्तपोषित करने, समर्थन देने और उनका इस्तेमाल करने की नीति रही है। इसलिए जब आप कहते हैं कि पाकिस्तान में कोई आतंकवादी शिविर नहीं है, तो यह जनरल परवेज मुशर्रफ, बेनजीर भुट्टो और आपके रक्षा मंत्री द्वारा एक सप्ताह पहले कही गई बातों के विपरीत बात है।"

आम तौर पर इस तरह की हाजिर जवाबी बहुत कम देखनी मिलती है। खास तौर पर तब जब भारतीय दृष्टिकोण की बात हो। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय नैरेटिव कैसे वैश्विक नैरेटिव बना रहा, इसका एक आदर्श उदाहरण देखिए। अमेरिकी अखबार द न्यूयॉर्क टाइम्स हमेशा से भारत के खिलाफ ही लिखता आया है। आतंकवादियों को उग्रवादी और बंदूकधारी लिखना न्यूयॉर्क टाइम्स का पुराना एजेंडा है और आदतन इस बार भी वही लिखा। न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट का शीर्षक था, "एट लीस्ट 24 टूरिस्ट्स गन्ड डाउन बाय मिलिटेंट्स इन कश्मीर" हिंदी अनुवाद कुछ इस तरह है, 'कश्मीर में मिलिटेंट्स ने 24 पर्यटकों को मार गिराया।'

इस पर अमेरिकी संसद की विदेश मामलों की समिति ने एक क्रिएटिव कदम उठाकर अपनी कड़ी आपत्ति जताई। विदेश मामलों की समिति ने इस रिपोर्ट को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर किया और मिलिटेंट्स शब्द को काटकर उसकी जगह टेररिस्ट (आतंकवादी) लिखा। एक्स पर शेयर की गई पोस्ट में समिति ने लिखा, "न्यूयॉर्क टाइम्स हमने आपके इस शीर्षक को ठीक कर दिया है। यह साफ तौर पर आतंकी हमला था, फिर चाहे यह भारत में हो या फिर इजरायल में। जब भी आतंकवाद की बात आती है तो न्यूयॉर्क टाइम्स वास्तविकता से कोसों दूर रहता है।" संभवतः यह पहली बार था, जब अमेरिकी संसद की विदेश मामलों की समिति ने भारत के पक्ष में खुलकर अंतरराष्ट्रीय मीडिया संस्थान की आलोचना की।

भारत–पाकिस्तान के बीच हुए सैन्य संघर्ष के दौरान भारत की स्वदेशी वायु रक्षा प्रणालियां देश और विदेशी मीडिया में चर्चा का विषय रहीं। आकाश और सरफेस टू एयर मिसाइल ने पाकिस्तान द्वारा दागी गई चीन निर्मित मिसाइलों और ड्रोन को सफलतापूर्वक रोका। ताइवान की मीडिया ने भारतीय रक्षा प्रणालियों की उत्कृष्टता और प्रभावशीलता की खुले तौर पर प्रशंसा की। पाकिस्तान ने हात्फ–१, फतह–१ और फतह–२ जैसे मिसाइल हथियारों का प्रयोग किया, जिन्हें चीन की तकनीक से विकसित किया गया था लेकिन भारत की मिसाइल रक्षा प्रणाली ने इन सभी को इंटरसेप्ट कर निष्क्रिय कर दिया। ताइवान मीडिया ने भारत की इस सफलता पर चीन में बने हथियारों की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े किए। सवाल इसलिए भी खड़े होते हैं, क्योंकि चीन में बनी पीएल–15ई मिसाइल जब पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ दागी, तो वह फुस्स हो गई थी अर्थात फटी ही नहीं। मजेदार बात यह है कि चीन के अनुसार वह उसकी सबसे बेहतरीन मिसाइलों में से एक थी।

इन पहलुओं को ध्यान में रख ताइवान मीडिया ने यह भी कहा कि चीन ने पाकिस्तान को युद्ध के लिए 'परीक्षण स्थल' की तरह उपयोग किया लेकिन भारतीय तकनीक ने उसे विफल कर दिया। आकाश और अन्य मिसाइलों की यह सफलता भारत की 'आत्मनिर्भर भारत' पहल की बड़ी उपलब्धि मानी गई, जिसने भारत की सैन्य ताकत को वैश्विक स्तर पर और मजबूत किया, जिसका लोहा वैश्विक मीडिया ने भी माना। यह कुछ उदाहरण हैं जिन्हें ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि विदेशी मीडिया संस्थानों ने भारत के नैरेटिव को न केवल स्वीकार किया, बल्कि उसे वैश्विक मंच पर सकारात्मक रूप से प्रस्तुत भी किया।

आपातकाल - जब भारत में प्रतिबंधित मीडिया रेंगने को था मजबूर

डॉ. चन्दन आनन्द

"भारत का गर्व हमेशा ही ऊंचा रहा है। लोकतंत्र में गर्व, सैन्य विजय का गर्व, विकसित होती तकनीकी का गर्व। और अब, जो कुछ श्रीमती गांधी ने किया है, उस पर कौन गर्व करेगा? — (गार्जियन, 9 अगस्त, 1975)

12 जून, 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को चुनावी भ्रष्टाचार का दोषी मानते हुए, उन्हें छह वर्षों के लिए सार्वजनिक पद पर रहने से अयोग्य घोषित कर दिया गया। तत्पश्चात अपनी सत्ता बचाने के लालच में इंदिरा गांधी ने 25 जून, 1975 को आंतरिक आपातकाल घोषित कर पूरे देश को कैद कर दिया। इंदिरा गांधी द्वारा देश पर लगाए इस आपातकाल के तहत न्यायपालिका, संसद, नागरिक समाज और प्रेस समेत लोकतंत्र की सभी संस्थाओं को लगभग नष्ट कर दिया गया। भारत पर 21 महीनों के लिए लगे इस आपातकाल का दंश देश के हर वर्ग और संस्था ने झेला, लेकिन इस आपातकाल के फलस्वरूप प्रताड़ित होने वाले वर्गों में प्रेस प्रमुख थी। 25 जून, 1975 को देश पर लगे आपातकाल के इस वर्ष 50 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर भारतीय प्रेस पर आपातकाल की विभिषिका के बारे बात करना आवश्यक है।

1947 से पूर्व भारत में ब्रिटिशर्ज के साथ संघर्ष के दौरान विभिन्न कानूनों और नियमों के द्वारा मीडिया को दबाने का जो कार्य किया गया, उससे तो सब भलीभांति परिचित हैं। समाज में विदेशी शासन के प्रति विरोध को बढ़ता देख अंग्रेजी शासन द्वारा कई प्रतिबंध समाचार–पत्रों पर लगाए गए। अंग्रेजों द्वारा सर्वप्रथम सन् 1795 ईसवी में पत्रों पर कठोर सेंसर लगाया गया। 1799 ईसवी में भारत के तत्कालीन वायसराय 'लॉर्ड वेलेजली' ने भारत में प्रकाशित होने वाले पत्रों का गला घोंटने के लिए अपना कठोर रूप प्रकट कर दिया। 4 अप्रैल, 1823 ईसवी को जॉन एडम ने समाचार–पत्र तथा प्रेस संबंधी नए नियम जारी किए। 14 मार्च, 1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट अंग्रेजी शासन द्वारा लाया गया। इसके तहत भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं पर पूर्ण रूप से रोक लग गई। तत्पश्चात् 1910 ईसवी का प्रेस एक्ट और 1939 के ऑर्डिनेंस ने हमारी प्रेस की लोकतांत्रिक आजादी का गला घोंटने की कोशिश थी।

15 अगस्त, 1947 को विदेशी अंग्रेजी शासन की समाप्ति के बाद भारत में मीडिया लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में स्थापित हुआ। अंग्रेजों के जाने के बाद भारत में स्वराज का उदय हुआ। हमारे पत्रों के विकास के मार्ग का भयंकर रोड़ा विदेशी शासन समाप्त हो गया। देशी पत्रों का गला घोंटते आ रहे संपूर्ण प्रतिबंध तथा दमनकारी कानून भी मृतप्रायः हो गए थे। स्वतंत्रता प्राप्ति और 1950 में देश में संविधान लागू होने के बाद देश में प्रेस अपने पंख फैला रही थी। लेकिन 1975 में मीडिया को फिर कुचलने का जो कार्य इंदिरा गांधी ने किया, उसकी कल्पना शायद ही कभी किसी ने की थी। किसी के विचार में ही नहीं था कि संविधान में उल्लिखित मौलिक अधिकारों, विशेषकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, जिसका सर्वोच्च न्यायालय ने प्रेस की स्वतंत्रता तक विस्तार कर दिया था, एक ही झटके में समाप्त कर दिया जाएगा। देश के समाचार–पत्रों को पुनः एक बार प्री–सेंसरशिप के काले युग में धकेल दिया जाएगा।

देश में आपातकाल लगाने के बाद इंदिरा गांधी ने 26 जून, 1975 को संपन्न एक बैठक में मीडिया के संबंध में स्वयं एक व्यापक नीति निर्धारित की। उस बैठक में प्रस्ताव लाया गया कि प्रेस काउंसिल को समाप्त किया जाए, संवाद समितियों को मिलाकर एक संवाद समिति बनाई जाए, विज्ञापन नीति की समीक्षा की जाए, पत्रकारों को दी गई आवास सुविधा वापस ली जाए और उन विदेशी संवाददाताओं को, जो सरकारी नीति पर चलने को तैयार न हों, देश से निर्वासित कर दिया जाए। 19 जुलाई, 1975 को घोषणा की गई कि यदि किसी विदेशी अखबार में भारत के विषय में 'कोई आपत्तिजनक रिपोर्ट' प्रकाशित होती है, तो इसके भारत में कार्यरत संवाददाता को देश से बाहर कर दिया जाए। मीडिया पर प्री–सेंसरशिप लगाने के साथ भारतीय भाषाओं के समाचार–पत्रों का पूरी तरह दमन किया गया।

भारतीय भाषाओं की जिन पत्र–पत्रिकाओं ने साम्राज्यवादी ताकतों को निडरता से उनका स्थान दिखाने का कार्य किया था, आपातकाल के समय उन्होंने एक बार फिर बिना डरे और झुके तानाशाही शासन को आइना दिखाने का काम किया। इंदिरा गांधी का आपातकाल भारतीय भाषाओं के पत्रकारों और पत्रकारिता के हौसले नहीं तोड़ पाया। वहीं, अभारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं और पत्रकारों के उस दौरान

के रुख को देखकर कालांतर में तंज कसे गए, "आपसे घुटने टेकने को कहा गया था, परंतु आप तो रेंगने लगे थे।''

भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों ने उस दिन देश के प्रति एक बार पुनः अपनी निष्ठा का प्रदर्शन करते हुए 'नई दुनिया' और 'दैनिक जागरण' जैसे अखबारों ने विरोध स्वरूप अपना संपादकीय स्तंभ खाली छोड़ दिया था। कमलेश्वर ने 'सारिका' का सेंसर की कालिख पुता अंक यथावत् छाप दिया था। काशी का 'गांडीव' सबसे न्यारा निकला, जिसने प्रथम पृष्ठ पर संपादकीय लिखा और उसमें एक सौ आठ बार मुद्रित किया गया – "प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जिंदाबाद।'' नीचे संपादक का नाम था – भगवानदास अरोड़ा, जिन्हें जेल में डाल दिया गया। इस दौरान अठारह प्रकाशनों को, जिनमें अनेक साप्ताहिक भी थे, को सीधे–सीधे प्रतिबंधित कर दिया गया। इनमें बंबई का उर्दू दैनिक 'हयात–ए–मिल्लत', मद्रास का तमिल दैनिक 'नथिगम', त्रिवेंद्रम से प्रकाशित मलयालम दैनिक 'थानिनीरम', आर.एस.एस. का अंग्रेजी अखबार 'ऑर्गेनाइजर' और हिंदी अखबार 'पांचजन्य', बाबू राव पटेल का लोकप्रिय फिल्मी प्रकाशन 'मदर इंडिया', बाल ठाकरे का 'मार्मिक' (मराठी साप्ताहिक) आदि पत्रिकाएं शामिल थीं।

इसी क्रम में सरकार ने गांधी जी द्वारा अहमदाबाद में शुरू की गई 'नवजीवन प्रेस' को भी सील कर दिया। इस प्रेस में 'हरिजन' प्रकाशित हो रहा था। इसके अलावा कुछ गुजराती, मराठी, हिंदी एवं तमिल प्रकाशनों पर भी रोक लगाई गई। 1977 में आपातकाल की समाप्ति के बाद अस्तित्व में आई जनता पार्टी की सरकार ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के पूर्व सचिव के.के. दास (आई.सी.एस.) की एक सदस्यीय समिति का गठन कर आपातकाल में हुए कार्यों का लेखा–जोखा एक श्वेत पत्र के रूप में देश के सामने रखा। श्वेत पत्र के अंश प्रेस और उससे संबंधित विषयों को स्पष्ट करते हैं। इसमें लिखा गया– फिल्मों सहित जन संपर्क साधनों के दुरुपयोग की विशिष्ट श्रेणियों में आने वाले उत्पीड़ित व्यक्तियों और अन्य से शिकायतें आमंत्रित की गई थीं। निर्धारित अंतिम तिथि 5 जून, 1977 तक कुल मिलाकर 1037 शिकायतें प्राप्त हुईं। इनमें भरमार (820) आपातकाल की ज्यादतियों और संबद्ध मामलों की शिकायतों की थीं, जो दास समिति के अध्ययन के दायरे में नहीं आती थीं। दास समिति ने जायज शिकायतों को पांच श्रेणियों में विभाजित किया। (1) सेंसरशिप प्रावधानों का दुरुपयोग, (2) पत्रकारों का उत्पीड़न, (3) फिल्मों को सर्टिफिकेट देने में धांधली, (4) संवाद समितियों समेत जन संपर्क साधनों के साथ चालबाजी, और (5) इनसे संबद्ध अन्य मामले। उनमें से ज्यादातर संख्या (103) पत्रकारों के उत्पीड़न के बारे में थी। शिकायतें ऐसे पत्रकारों, संपादकों तथा समाचार–पत्रोंध्पत्रिकाओं के प्रकाशकों और मुद्रकों, फिल्म जगत के लोगों और सरकारी कर्मचारियों से मिलीं, जो या तो इनके भुक्तभोगी रहे या जिन्हें जन संपर्क साधनों के दुरुपयोग के मामलों की जानकारी रही थी। शिकायतकर्ताओं में प्रमुख पत्रकारों सहित पत्रकारों की आई.एफ.डब्ल्यू.जे. (इंडियन फेडरेशन ऑफ वर्किंग जर्नलिस्ट्स) और एन.यू.जे. (नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स) जैसी एसोसिएशन भी शामिल थीं।

THE INDIAN EXPRESS

No
but

इस दौरान 253 पत्रकारों, संपादकों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें से 110 को कम–से–कम एक वर्ष के लिए मीसा (मेंटिनेंस ऑफ इंटरनल सिक्योरिटी एक्ट) के तहत नजरबंद रखा गया, जबकि 60 अन्य को डी.आई.एस.आई.आर. (डिफेंस एंड इंटरनल सिक्योरिटी ऑफ इंडिया रूल्स) के अंतर्गत जेल में रखा गया और 83 पत्रकारों को अन्य कारणों से गिरफ्तार किया गया। संत विनोबा भावे का पत्र भी आपातकाल के प्रकोप का शिकार हुआ। सात विदेशी

संवाददाताओं को देश से बाहर निकाला गया। देश में 27 अन्य विदेशी संवाददाताओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया। 51 भारतीय संवाददाताओं 'पत्रकारों की मान्यता समाप्त की गई। 97 समाचार–पत्र–पत्रिकाओं के विज्ञापन रोके गए और 12 के विज्ञापन–आवेदन अस्वीकार कर दिए गए।

हालांकि उस दौर में बहुत से वामपंथी संगठनों और नेताओं ने आपातकाल का खुलकर सर्मथन किया था। फिर भी वामपंथ का चरित्र और आस्था को उद्धृत करते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी कहती हैं, ''वे लोग जो रेडियो, हमारे रेडियो और टेलीविजन की आलोचना में इतने मुखर हैं, मेरा मतलब उनकी विश्वसनीयता और ऐसी ही बातों से है, ये वो लोग हैं जो चीन जैसे देशों की प्रशंसा करने को आतुर रहते हैं जहां इस बात की कोई अवधारणा ही नहीं है कि स्वतंत्रता क्या होती है या क्या हो सकती है। अतः, इसलिए, हमें इस तरह के पाखंड से सचेत रहना चाहिए और इनमें से बहुत सारे लोग, मैं यह कहने के लिए क्षमा चाहती हूं, बाहर के देशों से बहुत नजदीकी संबंध रखते हैं। उनके बच्चे वहां मुफ्त में पढ़ाए जाते हैं। वे वहां का अनेक बार दौरा करते हैं और हमें यह अच्छी तरह मालूम है कि वे वहां किससे मिलते हैं और उन्हें क्या कहा जाता है।'' विख्यात पत्रकार जी.एस. भार्गव के अनुसार, 'उन्होंने बताया कि भारत में वामपंथी चीन की प्रशंसा करते हैं, यद्यपि उस देश में प्रेस की आजादी नहीं है। उन्होंने यह कहते हुए व्यंग्य कसा कि वे बहुधा विदेश जाते हैं और उनके बच्चे वहां मुफ्त में पढ़ाए जाते हैं। यह सोवियत संघ और कम्युनिस्ट नेताओं के बच्चों की लुमुंबा विश्वविद्यालय में निःशुल्क शिक्षा की ओर इशारा रहा होगा।'

आज भी ये लोग देश में लोकतंत्र और संविधान का रोना रो रहे हैं। ये वही लोग हैं, जिन्होंने उस समय लोकतंत्र की हत्या कर केवल अपनी सत्ता के लिए देश में आपातकाल लगाया और उसका सर्मथन किया। उस दौरान वामपंथी नेताओं और दलों की भूमिका आज की तरह ही इस अलोकतांत्रिक घटना के समर्थक की थी। इसे विडंबना या कम्युनिस्ट पाखंड ही कहेंगे कि आपातकाल के दौरान भा.क.पा ने स्थानीय कांग्रेस सरकार के साथ मिलकर पटना में 'फासीवाद विरोधी' रैलियां आयोजित की थीं। इनमें से एक रैली में जयप्रकाश नारायण के पुतले को फांसी पर लटकाया गया था, क्योंकि उन्हें फासीवादी ताकतों की रहनुमाई करने वाला माना जा रहा था।

अभारतीय परिवेश और मतों से पनपी सभ्यताओं ने तो अपने विचारों को स्थापित करने के लिए भारत के गौरव और लोकतंत्र को नष्ट करने का सैकड़ों वर्षों तक राजनीतिक व सांस्कृतिक प्रयास किया, लेकिन स्वतंत्रता उपरांत भारत में लोकतंत्र की हत्या कर भारतीय मूल्यों को कलंकित करने का काम इंदिरा गांधी ने पहली बार किया। वर्तमान में भी मीडिया की आजादी को लेकर नए विमर्श खड़े करने का प्रयास ये लोग दिन–रात करते हैं। आज मीडिया उपदेशक बने लोगों का लोकतंत्र और संविधान से कोई वैचारिक या ऐतिहासिक वास्ता ही नहीं है। गोदी मीडिया और ऐसे अनेकों नए शब्दों को गढ़कर जो लोग आज मीडिया के उपदेशक बने हुए हैं, उन्हें वे दौर भी याद रहे जब भारत में मीडिया को प्रतिबंधित कर रेंगने पर मजबूर किया गया था। इंदिरा गांधी का आपातकाल भारत के मूल्यों और विचारों का कत्ल था। इंदिरा गांधी द्वारा किए गए इस अभारतीय कृत्य को सदैव अपने समृति पटल पर रखते हुए सबको इस राष्ट्रीय शर्म की अधिक से अधिक विभर्त्सना करनी चाहिए, ताकि यह कृत्य दोबारा कभी दोहराया न जा सके और इसका समर्थन करने वाले लोगों और विचारों को भारतीय समाज में स्वीकार्यता न मिल सके।

(विमर्श)

राम के जीवन चरित कृष्ण की लीला में चित्रित होता है भारत का लोकमन

त्रिवेणी प्रसाद तिवारी

लोक को शहर का विलोम नहीं समझना चाहिए। सभी नगर, महानगर लोक में हीं समाहित होते हैं। जनसंख्या के सघन होने से शहर और विरल होने से गांव हो जाना लोक नहीं है। सघनता–विरलता लोक का ही संचरण व्यवहार है। प्रकृति उसमें सद्आचरण निर्धारित करती है। प्राकृतिक परिवेश यदि सघन है तो लोकाचरण सत् होता है और यदि वह विरल हो जाए तो आचरण असत् होता जाता है। भारत में लोक का अर्थ केवल गांव–गिरांव नहीं है। इसे नगर से दूर खेतिहर समाज में धंसा हुआ जीवन समझना भी अंधदृष्टि ही है। इसे लोकगीतों में ही ढूंढना सतही है। देशज–भदेस रीति–रिवाजों में बांधना अधूरापन है। मधुबनी, वरली, कलमकारी अथवा अल्पना से लेकर वनवासी कला वस्तुओं में लोक की स्थापना एकांगीपन है। भारतीय लोक व्यापक है, इसके आचार–विचार का सूक्ष्म से विराटतम् बोध लोक का ही प्रतिबिंब है। लोक, जीवन पद्धतियों का सांस्कृतिक परिवेश है, जिसमें सभ्यता के सभी आयाम समाहित रहते हैं। लोक एक गतिमान प्रवाह है, जिसमें प्रवाहित जन–मन का एक अपना विशिष्ट समयबोध होता है। इसका विश्लेषण कर पाना कुछ वैसा ही है, जैसे आगे बढ़ चुकी नदी के जल का अनुमान लगाना। समझना या अनुमान विलगाव पैदा करता है, क्योंकि अनुमान या थाह लगाना ठहराव की प्रक्रिया है और इस तरह हम हमेशा बीते हुए की ही व्याख्या कर पाते हैं। अतः उसके प्रवाह में होना लोकमन का होना है। जैसे गंगा को दूर से देखना केवल एक जलराशि, एक नदी या हिमालय से पिघलता ग्लेशियर या केवल दो पाटों के बीच जल हो सकता है, परंतु गंगाजी की पवित्रता और श्रद्धा का भाव लोकमन है।

इसका पुरोधा कोई व्यक्ति नहीं है, बल्कि काल सापेक्ष सनातन मर्यादाएं, जिन्हें राम, कृष्ण ने जीया, उसी सहजता को कला ने रूपित करने का प्रयास किया है। सहजता लोक का स्वभाव है। आचरण इसकी नैतिकता है। यही लोकाचार अपनी प्रसन्नता में जब उत्सव रचता है, तो वही त्योहार बन जाता है। शुभ कर्मों की उपासना में जब कोई देवता रचे जाते हैं तो सहज रेखाओं में रूपाकारों की सृष्टि हो जाती है। ये सरल रेखाएं एवं रूपरचना अपने नैसर्गिक स्वरूप में अत्यंत गतिमान होती हैं। उसका संचार क्षेत्र विशेष से परे सभी जगह (भारतीय परिक्षेत्र) लगभग एकसमान ही होता है। लोक में व्याप्त चेतना से ही उसको गति मिलती है, इसीलिए भारत के किसी भी कोने की कला रचना में आपको कुछ मूलभूत साम्यता मिलेगी जैसे विषय, भावबोध और दर्शन भूमि स्तर पर। सबका अंतःकरण एक है परंतु मुखमंडल अलग–अलग है। लोक की भावभूमि पर जिस चित्र–मूर्ति की निर्मिति होती है, वह सहज, अनगढ़ होती है परंतु प्रतीकात्मकता में एक होती है और प्रतीति में दोहराव वाला होता है।

गुप्त काल की समृद्धशाली चित्र–मूर्ति परंपरा के बाद भारतीय कला में एक अवसान काल आता है। जब हम अजंता एवं बाघ के रेखा–रंगों का अंकन लगभग भूल गए। ग्यारहवीं–बारहवीं सदी में लघु चित्र एवं पोथी चित्रों के रूप में पुनः जो स्वरूप दिखाई पड़ता है, उनमें वही भारत का लोकमन चित्रित होता है – राम के जीवन चरित के रूप में, कृष्ण की लीला रूप में। भारत का लोक जब तक राम आख्यान न गढ़े, कृष्ण के नटखट रूप न रचे, तब तक कलासृजन यात्रा अधूरी रहती है।

मध्यकाल में चित्रों का प्रारंभिक स्वरूप पोथियों में मिलता है। यह समय इस्लामिक आक्रमण एवं उसकी बर्बरताओं से त्रस्त भयानक काल था। जो राज्यशक्तियां कला संस्कृति को बढ़ावा देती थीं, वो युद्धों में अपना मान बचा रहीं थीं। ऐसे में धर्माचार्यों और आश्रमों ने अपनी–अपनी परंपरानुसार लिखवाए ग्रंथों में जो भी चित्र बनवाए, वही सुरक्षित प्रतियां वर्तमान में भारतीय कला की अनमोल विरासत का परिचय देती हैं। ये चित्र सधे हुए साधनारत कलाकारों द्वारा निर्मित नहीं प्रतीत होते, बल्कि किसी साधारण के द्वारा बनवाए गए मालूम पड़ते हैं। जब इन पोथियों पर टूटी रेखाओं में चित्ररचना आरंभ हुई, तो एक अलग ही कला संसार सिरज गया। ''कथा सरित्सागर'' सरीखे अद्भुत ग्रंथों पर चित्रण हुआ। गीत–गोविन्द, बसन्त विलास का मनोहारी चित्रण मिलता है। दोनों ओर लिखे हुए शब्दों के बीच विभिन्न रंगों एवं सोने से चित्रकारी की गई। जैन परंपरा के ग्रंथों पर पोथी चित्रों का कार्य अधिक हुआ।

इनका काल हर्षवर्धन के अवसान के बाद और पंद्रहवीं सदी के मध्य का है। जैन ग्रंथ ''कल्पतरू'' के अलावा जैन आचार्यों ने 'बाल गोपालस्तुति,' 'दुर्गासप्तशती', 'मार्कण्डेय पुराण' और 'रति रहस्य' (कामसूत्र पर आधारित) सरीखे ग्रंथों पर पोथी–चित्रों का निर्माण कराया।

इन पोथी–चित्रों में चित्रित चित्रों की शैली परिपरिष्कृत एवं भावपूर्ण नहीं थी। इनमें कठोरता थी, परंतु यही अनगढ़, विरस कोणिकता युक्त चित्रांकन राजस्थानी चित्रकला शैली का आधार बनी। आगे चलकर पंद्रहवीं–सोलहवीं शताब्दी में राजस्थानी चित्र शैली भारतीय कला में सौंदर्यशा ली और भारतीयपने के साथ विकसित होती है। इसे लघु चित्रकला शैली के नाम से पुकारा गया। इसी प्रभाव और अनूठी शैली को मुगलों ने अपनाया। मुगलों ने विषय–कथानक तुर्की, फारसी के ग्रंथों से लिया, परंतु चित्रशैली भारतीय ही थी। इन पोथी–चित्रों और ताड़पत्रों पर चित्रित चित्रों की शैली परिष्कृत ही थी। रेखाओं में कठोरता है, परंतु इन चित्रों से राजस्थानी शैली की उद्भावना मिलती है। लघु चित्रों की इन परंपराओं से आगे चलकर पंद्रहवीं–सोलहवीं सदी में राजस्थानी शैली के विभिन्न सौंदर्यशाली रूप देखने को मिलता है। यहां जिज्ञासावश एक प्रश्न उठता है कि जब राजस्थानी शैली में प्रभूत कार्य हुआ, तो उनका विषय क्या था? कलामन की सामूहिक अभिव्यक्ति किस ओर थी? कलाकारों का मन लोक की ओर था और लोक में राम–कृष्ण की लीलाओं की हजारों छवियां!!!

रंग–रेखाओं की विषेशताओं के आधार पर शैलियों को भले ही मेवाड़, बूंदी, कोटा एवं पहाड़ी कांगड़ा आदि के रूप में बांट लें, परन्तु लघु चित्रकला पर यदि समग्र दृष्टि रखें, तो आप पाएंगे कि भारत का लोक ही इसकी प्रेरणा भूमि रही है। विषय–वस्तु, चित्रांकन पद्धति, ब्रश एवं रंगों का प्रयोग और तकनीक में देशज भाव ही रहा, भले उसे आलोचकीय भाषा में अपभ्रंश शैली कहा जाए। वह मध्यकाल का समय, जब भारत के हृदय में सन्तों का भक्तिमय गीत बह रहा था। लोक–लोकांतर में रामानंद, वल्लभाचार्य के शिष्यों भक्त कवियों का स्वर अनुनादित हो रहा था। उन्हीं गीतों के भाव, उनकी छंदमयता चित्रों में 'प्राणछंद' बनकर ध्वनित हुए। लोक का मन ही कला पर्याय बना, लघु चित्रकला शैली के रूप में।

लघुचित्रकला की यात्रा में आधुनिक विद्वान मुगलों के प्रभाव को बड़ा करके आंकते हैं। कला इतिहास में इसे बहुत बड़े अध्याय के रूप में पढ़ाया जाता है, परंतु यदि गहराई से विश्लेषण करें तो आप पाएंगे कि मुगलों के प्रभाव में ईरानी–पर्शियन शैली का प्रभाव दिखता है, जिसमें हांसिया बनाने और बेल–बूटेदार कढ़ाई पर ही अधिक बल दिया गया है। मुगल के नाम पर जिस चित्रशैली को विशेष प्रतिष्ठा दी जाती है, उसमें मूलतः भारतीय कलाकारों का ही योगदान रहा है। मूलतः भारतीय चित्रकारों ने अपनी स्थानिकता, लाक्षणिकता के स्व मुहावरे, ब्रुशों का पैनापन, रंग–प्रयोग और भाव–भंगिमाओं में भारतीयपन की ही सर्जना की है। ग्राम्य जीवन, जंगल–पशुओं आदि के चित्रण में भारत के लोक–प्रांतर का गहन अध्ययन दिखाई पड़ता है। मुगल चित्रकारों में कुछ को छोड़कर अधिकतम संख्या हिंदू कलाकारों की ही थी। उन्हें विषय एवं निर्देश भले ही मुगल बादशाहों की रुचि अनुसार मिलते थे, परंतु चित्रकारी में वे अपनी ही विशिष्ट सांस्कृतिक–पारंपरिक अभ्यास व प्रतिमान को ही उकेरते थे, जिसके प्रमाण स्वरूप रज्मनामा की चित्र प्रतियों में देख सकते हैं।
राजस्थानी और पहाड़ी कलाओं में दरबारी दस्तावेजी चित्रण कम हैं, बल्कि प्रेम और प्रकृति का मनोहारी निरूपण अधिक है। यहां कलाकारों को अधिक छूट दी गई। उसका कलामन अधिक मुखर हो उठा। राधा–कृष्ण, रामायण और रागमाला के चित्रण में भारतीय वातावरण का अद्भुत अंकन किया गया है। राग–रागिनियों पर आधारित विशुद्ध भारतीय विषय पर चित्रण परिकल्पना अनूठा चित्र संसार उपस्थित करती है। विभिन्न राग... उनके गायन का विशेष प्रहर, उन रागिनियों से उद्दीपित ऋतु और विलक्षण स्वर साधना में लोक प्रकृति चलायमान होती थी। रागों की सिद्धि में सहायक विभिन्न आलम्बनों का स्वरूप निर्माण, लोक प्रतीकों के बिना असंभव था। स्वरलहरियों को चित्रित करने का विचार ही सर्वथा नवीन परंतु कितना चुनौतीपूर्ण था? यह लोक की गहरी समझ के बिना बहुत कठिन था, किंतु कलामन, लोकमन से एकाकार होकर ही रागमाला जैसी अनूठी कृतियों को गढ़ सका। चेहरों का लालित्य, प्रेमभाव का उद्दीपन, पत्तियों की सघनता और सुरुचि रंगों का सादृष्य यदि लोक से न लिए होते तो ''बणी–ठणी'' न बन पाती। कांगड़ा के चित्रों में विशुद्ध राधाकृष्ण प्रेम न बन पाता। मध्यकालीन भारत की कला परंपरा में, चित्र–मूर्ति अथवा स्थापत्यों में विशुद्ध पौराणिक आराध्य जनित रूपाकारों की ही सृष्टि हुई। भारतीयता की लोकधारा जिस रामायण, श्रीमद्भागवत् और देवी महात्म्य के रूप में अपनी कथा–वार्ता कहता सुनता आया है, उसी को राज्याश्रयों में कलाकारों की पीढ़ियों ने चित्रित किया। लघु चित्रकला के रूप में राजस्थानी, पहाड़ी शैलियों का नाम भले ही दें, परंतु इस पूरी कला यात्रा में प्रथमतः राम और कृष्ण को ही रूपायित किया गया। श्रीनाथद्वारा राजस्थान की पिछवई शैली में कृष्ण बने हों अथवा तंजौर शैली तमिलनाडु में रचित कृष्ण हों, प्रस्तुति भंगिमा में भिन्नता अवश्य हो सकती है परंतु लोक के मनस में रमने वाले रूपक एक ही है।

समाचार संकलन

2027 तक भारत का एआई बाजार तीन गुना बढ़ने की उम्मीद

भारत का आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) बाजार आने वाले समय में अभूतपूर्व गति से बढ़ने की उम्मीद है। बॉस्टन कंसल्टिंग ग्रुप (बीसीजी) की एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, देश का एआई बाजार 2027 तक तीन गुना बढ़कर लगभग 17 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच सकता है। यह वृद्धि मुख्य रूप से तीन बड़े कारकों पर आधारित है – एंटरप्राइज टेक्नोलॉजी (व्यावसायिक तकनीक) में निरंतर निवेश, एक व्यापक और तेजी से विकसित हो रहा डिजिटल इकोसिस्टम और कुशल पेशेवरों की सशक्त श्रेणी।

रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि भारत अब वैश्विक एआई टैलेंट का एक बड़ा केंद्र बनकर उभर रहा है। भारत में फिलहाल 6,00,000 से अधिक एआई पेशेवर हैं और साल 2027 तक यह संख्या दोगुनी होकर 12.5 लाख पर पहुंच जाने की उम्मीद है। वर्तमान में भारत के पास दुनिया के कुल एआई प्रतिभा भंडार का 16 प्रतिशत हिस्सा है, जिससे यह अमेरिका के बाद दूसरा सबसे बड़ा एआई टैलेंट हब बन गया है। यह उपलब्धि भारत की जनसांख्यिकीय ताकत और देश की सुदृढ़ एसटीईएम (साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग, मैथ्स) शिक्षा प्रणाली का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

देश में मौजूद तकनीकी विश्वविद्यालयों, इंजीनियरिंग कॉलेजों और नवाचार केंद्रों ने ऐसे लाखों युवाओं को प्रशिक्षित किया है, जो अब एआई अनुसंधान, मॉडलिंग, डाटा इंजीनियरिंग और समाधान–निर्माण जैसे क्षेत्रों में वैश्विक मानकों के अनुरूप कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही, स्टार्टअप्स और बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत में अपने एआई अनुसंधान एवं विकास केंद्रों को सक्रिय रूप से स्थापित कर रही हैं, जिससे प्रतिभा को घरेलू अवसर भी उपलब्ध हो रहे हैं।

'दि इंडियन एक्सप्रेस' का पटना से 11वां संस्करण लॉन्च

अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र 'दि इंडियन एक्सप्रेस' ने पटना से अपना 11वां संस्करण लॉन्च किया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राजधानी पटना में इसके स्थानीय संस्करण का विधिवत शुभारंभ किया। इस लॉन्च के साथ दि इंडियन एक्सप्रेस अब देश के 11 शहरों अहमदाबाद, चंडीगढ़, दिल्ली, जयपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, नागपुर, पुणे, वडोदरा और पटना से प्रकाशित हो रहा है।

दि इंडियन एक्सप्रेस ने इस अवसर पर लिखा, 'पटना संस्करण का शुभारंभ उस महीने में हो रहा है, जो भारतीय लोकतंत्र के एक कलंकित अध्याय – 1975 में लगाए गए आपातकाल – के 50 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है। और यही दि इंडियन एक्सप्रेस था, जिसने रामनाथ गोयनका के नेतृत्व में मौलिक अधिकारों के निलंबन, प्रेस पर अंकुश और सत्ता के दुरुपयोग का विरोध करने में अग्रणी भूमिका निभाई। इसने सेंसरों द्वारा सामग्री हटाने के विरोध में एक खाली संपादकीय प्रकाशित किया था।' रामनाथ गोयनका ने 1932 में मद्रास से एक संस्करण वाले अखबार के रूप में 'द इंडियन एक्सप्रेस' समाचार पत्र की शुरुआत की थी।

ओटीटी–फ्री डिश का असर, 4 करोड़ उपभोक्ताओं ने छोड़ी केबल टीवी सेवा

भारत में केबल टेलीविजन इंडस्ट्री एक बड़ी चुनौती के दौर से गुजर रही है। वर्ष 2018 की तुलना में 2024 तक भुगतान–आधारित केबल टीवी कनेक्शन वाले घरों की संख्या में भारी गिरावट दर्ज की गई है। ऑल इंडिया डिजिटल केबल फेडरेशन और ईवाई इंडिया की एक संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार, 2018 में जहां देश में ऐसे 15.1 करोड़ घर थे, वहीं यह संख्या 2024 में घटकर मात्र 11.1 करोड़ रह गई। यानी छह वर्षों में करीब 4 करोड़ उपभोक्ता केबल टीवी सेवा से अलग हो गए।

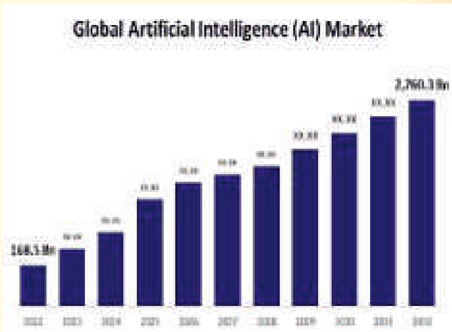

जब उपभोक्ता घटते हैं, तो ऑपरेटरों की आमदनी में भी कटौती होती है, जिससे वे कर्मचारियों को बनाए रखने में असमर्थ हो जाते हैं। इस कारण न केवल शहरी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी केबल आधारित सेवाओं से जुड़े रोजगार तेजी से सिकुड़ते जा रहे हैं। इस गिरावट का सीधा असर देश भर में कार्यरत लाखों स्थानीय केबल ऑपरेटरों पर पड़ा है। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 2018 से 2024 के दौरान स्थानीय केबल ऑपरेटरों द्वारा दी जाने वाली प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नौकरियों में 31 प्रतिशत की कमी आई है। आंकड़ों के मुताबिक, इस अवधि में लगभग 1.14 लाख से 1.95 लाख तक नौकरियों में कटौती आई है।

केबल टीवी कनेक्शन में आई यह गिरावट मीडिया और मनोरंजन जगत के व्यापक बदलावों की ओर संकेत करती है। जहां एक ओर ओटीटी प्लेटफॉर्म्स जैसे नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम वीडियो, डिज्नी प्लस, हॉटस्टार और जियो सिनेमा ने दर्शकों को अपनी पसंद का कंटेंट किसी भी समय, किसी भी डिवाइस पर उपलब्ध कराया है, वहीं पारंपरिक केबल टीवी अब अपेक्षाकृत सीमित और निर्धारित समयसारिणी वाला माध्यम बनकर रह गया है। इसके अलावा, सरकार द्वारा समर्थित फ्री डिश जैसी डीटीएच सेवाएं भी केबल टीवी ग्राहकों के लिए एक सशक्त विकल्प बनकर उभरी हैं।

दैनिक भास्कर ने 'घर–घर सिंदूर' पहुंचाने की आधारहीन खबर पर छापा स्पष्टीकरण

दैनिक भास्कर समाचार पत्र ने 28 मई के अंक में 'मोदी 3.0 की वर्षगांठय घर–घर सिंदूर पहुंचाएगी भाजपा, 9 जून से एक माह तक चलेगा अभियान' शीर्षक से समाचार प्रकाशित किया था। इस खबर में लिखा गया था कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता को जन–जन तक पहुंचाने की तैयारी के तहत भाजपा महिलाओं को सिंदूर बांटेगी। प्रकाशित समाचार में भाजपा के आउटरीच प्रोग्राम के तहत किए जाने वाले अन्य कार्यक्रमों की भी विस्तृत जानकारी दी गई थी।

इस खबर के प्रकाशित होने के बाद सोशल मीडिया में कई तरह की चर्चाएं होने लगीं। भाजपा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर 30 मई को लिखा कि दैनिक भास्कर में छपी यह खबर गलत है। इसके पश्चात् दैनिक भास्कर को इस खबर को आधारहीन बताने के लिए खण्डन के रूप में 31 मई को एक विस्तृत समाचार प्रकाशित करनी पड़ा। 'देशभर में घर–घर सिंदूर पहुंचाने का भारतीय जनता पार्टी की ओर से कोई कार्यक्रम नहीं' शीर्षक से छपे इस समाचार में दैनिक भास्कर ने स्पष्टीकरण दिया, 'भास्कर की पत्रकारिता सत्य आधारित रही है। 28 मई को प्रकाशित इस खबर में भाजपा का कोई आधिकारिक वक्तव्य नहीं लिया गया था। पाठकों के समक्ष स्थिति स्पष्ट करते हुए हमें इस चूक के लिए खेद है।' उधर, भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने सिंदूरे बांटने की खबर को आधारहीन बताया।

टाइम्स ऑफ इंडिया ने महिला सैन्य अधिकारियों को भाजपा अभियान का चेहरा बताने वाली रिपोर्ट को बताया 'भ्रामक'

'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने एक स्पष्टीकरण जारी करते हुए स्वीकार किया है कि उसने अपने पहले पन्ने पर एक ऐसी रिपोर्ट प्रकाशित की थी, जो तथ्यात्मक रूप से भ्रामक थी। रिपोर्ट में दावा किया गया था कि कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह को भाजपा की महिला–केंद्रित प्रचार मुहिम का चेहरा बनाया जाएगा। खबर में दावा किया गया था कि यह अभियान 9 जून से आरंभ होगा और इसका उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 11 वर्षों की उपलब्धियों को रेखांकित करना है।

हालांकि अब टाइम्स ऑफ इंडिया ने एक आधिकारिक माफीनामा जारी करते हुए स्पष्ट किया है कि भाजपा की ऐसी कोई योजना नहीं है। अखबार ने कहा, "अब हमारे संज्ञान में आया है कि भाजपा की ऐसी कोई योजना नहीं है। यह रिपोर्ट भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जमाल सिद्दीकी के बयान के आधार पर तैयार की गई थी, लेकिन हमें पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व से इसकी पुष्टि करनी चाहिए थी। इस चूक के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।"

अखबार ने यह भी जानकारी दी कि यह रिपोर्ट विशेष रूप से उसके लखनऊ और चेन्नई संस्करणों में 1 जून को प्रकाशित हुई थी। इस बीच, भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने रिपोर्ट को सिरे से खारिज करते हुए सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। अमित मालवीय ने संबंधित रिपोर्ट को "फर्जी खबर" करार देते हुए सोशल मीडिया पर आपत्ति दर्ज कराई। उन्होंने अपने एक्स पर पोस्ट करके कहा कि जमाल सिद्दीकी के बयान को तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया। मालवीय ने लिखा, "सिद्दीकी ने सिर्फ इतना कहा था कि कर्नल कुरैशी को मुस्लिम समुदाय में एक सशक्त महिला के उदाहरण के रूप में देखा जाना चाहिए।"

प्रेस काउंसिल के गठन में देरी पर दिल्ली हाई कोर्ट का नोटिस

दिल्ली हाईकोर्ट ने मुंबई प्रेस क्लब (एमपीसी) द्वारा दायर एक याचिका पर केंद्र सरकार और प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) को नोटिस जारी किया है। एक रिपोर्ट के अनुसार, याचिका में पीसीआई के अध्यक्ष को निर्देश देने की मांग की गई है कि वे बिना किसी देरी के 15वीं प्रेस काउंसिल का गठन करें। यह याचिका ग्रीष्मकालीन अवकाश से पहले 26 मई को जस्टिस सचिन दत्ता के समक्ष सुनवाई के लिए आई थी। इस पर उन्होंने नोटिस जारी कर प्रतिवादियों को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। इस मामले की सुनवाई 10 जुलाई को फिर होगी।

भारत में सैटेलाइट इंटरनेट सेवा के लिए स्टारलिंक कंपनी को मिला लाइसेंस

एलन मस्क की कंपनी स्टारलिंक को भारत में सैटेलाइट इंटरनेट सेवा प्रदान करने के लिए सरकार से जरूरी लाइसेंस मिल गया है। दूरसंचार विभाग ने स्टारलिंक को ग्लोबल मोबाइल पर्सनल कम्युनिकेशन बाय सैटेलाइट लाइसेंस दिया है। भारती एयरटेल–यूटेलसैट की वनवेब और रिलायंस जियो के बाद स्टारलिंक तीसरी कंपनी है, जिसे यह लाइसेंस मिला है। संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने बताया कि अब स्पेक्ट्रम का आवंटन होगा। इसके बाद बड़े पैमाने पर सेवाएं शुरू हो सकेंगी।

स्टारलिंक स्पेस–एक्स का नया प्रयास है। यह सैटेलाइट के जरिए इंटरनेट देने का काम करती है। इसका लक्ष्य है कि लोगों को बेहतर इंटरनेट का अनुभव मिले। यह धरती की निचली कक्षा में बहुत सारे सैटेलाइट लगाकर किया जाता है। ये सैटेलाइट आम सैटेलाइट से धरती के ज्यादा करीब होते हैं। इसलिए इंटरनेट की स्पीड तेज होती है। डेटा तेजी से पहुंचता है। यह तकनीक भारत के उन दूरदराज के इलाकों के लिए बहुत जरूरी है, जहां इंटरनेट की सुविधा नहीं है।

हाल ही में केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा था कि स्टारलिंक सैटेलाइट कनेक्टिविटी टेलीकॉम के गुलदस्ते में एक और फूल की तरह है। मोबाइल कनेक्टिविटी के साथ–साथ हमारे पास ऑप्टिकल फाइबर कनेक्टिविटी भी है, लेकिन सैटेलाइट कनेक्टिविटी दूरदराज के इलाकों में बहुत अहम है, जहां वायर्ड कनेक्शन आसानी से नहीं पहुंच सकते।

संकलनकर्ता – डॉ. रविंद्र सिंह भड़वाल

फोटो साभार – गूगल

OPERATION
SINDOOR
संवाद सेतु